MSK 002 व्याकरण

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

व्याकरण

खंड 4

तिङन्त प्रकरण – एध् धातु (आत्मनेपद)

खंड 5

तिङन्त प्रक्रिया

खंड 6

कृदन्त प्रकरण

खंड 7

तद्धित प्रकरण

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	
प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।	
प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी भूतपूर्व कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	
प्रो. दीप्ति त्रिपाठी भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	
प्रो. सत्यकाम, हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ इग्नू, नई दिल्ली।	

कार्यक्रम संयोजक

प्रो. सत्यकाम,
प्रोफेसर, हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम सम्पादक

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर, जयपुर।

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या	पाठ्यक्रम संयोजक
डॉ. पंकज कुमार व्यास एसो. प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश।	16, 17, 18, 19, 20	प्रो. सत्यकाम प्रो. जगदीश शर्मा **सम्पादन सहयोग** प्रो. जगदीश शर्मा प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ इग्नू, नई दिल्ली।
डॉ. हरेन्द्र भार्गव प्राचार्य, पीताम्बरा संस्कृत महाविद्यालय, दतिया।	21, 22	
डॉ. धनंजय कुमार आचार्य असि. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	23, 24, 25, 26	
प्रो. आजाद मिश्र सें. नि. प्रोफेसर, 2/239 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।	27, 28, 29	

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSK 002 व्याकरण

खंड

4

तिङन्त प्रकरण – एध् धातु (आत्मनेपद)

इकाई 16

एध् धातु (आत्मनेपद) लट् एवं लिट् लकार

इकाई 17

एध् धातु (आत्मनेपद) लुट् एवं लृट् लकार

इकाई 18

एध् धातु (आत्मनेपद) आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार

इकाई 19

एध् धातु (आत्मनेपद) लङ् एवं विधिलिङ् लकार

इकाई 20

एध् धातु (आत्मनेपद) लुङ् एवं लृङ् लकार

खंड 4 का परिचय

एम.ए. (संस्कृत) के द्वितीय पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अब आप चतुर्थ खंड, तिङन्त प्रकरण मे ंएध् धातु के आत्मनेपद रूपों की सिद्धि से सम्बद्ध अध्ययन करेंगे। इस खंड में कुल पांच इकाइयां हैं जिनमें एध् धातु से तिङन्त प्रत्ययों के लगने से लट् से लेकर लृङ् लकार तक सभी दस लकारों में बनने वाले रूपों से सम्बद्ध सूत्र, उनका अर्थ, सिद्धि प्रक्रिया आदि का वर्णन किया गया है।

आशा है एध् धातु के सभी दस लकारों में तिङन्त प्रत्ययों के लगने से बनने वाले रूपों से सम्बद्ध एवं प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले सूत्रों के परिचय से रूपसिद्धि प्रक्रिया को आप सम्यक् रूप से जानने में सफल होंगे। परिणामस्वरूप आप उनका विभिन्न लकारों एवं वचनों कें अनुरूप प्रयोग करने में भी समर्थ हो जाएंगे।

शुभकामनाओं सहित।

इकाई 16 एध् धातु (आत्मनेपद) लट् एवं लिट् लकार

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- एध् (वृद्धौ) धातु के लट् एवं लिट् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढेंगे।
- एध् धातु अनुदात्तेत होने के कारण आत्मनेपदी धातु है; यह जानेंगे।
- लट् एवं लिट् प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से जानेंगे।
- लट् एवं लिट् प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में सक्षम होंगे, तथा
- एध् धातु के लट् एवं लिट् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातुरूपों को जानकर उनका प्रयोग करने में समर्थ हो पाएंगे।

16.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई भ्वादिप्रकरण में विद्यमान परस्मैपदी धातुओं से सम्बन्धित अन्तिम इकाई थी। उस इकाई में आपने "पुषादि–द्युताद्यलृदितः परस्मैपदेषु" सूत्र पर्यन्त व्याख्या तथा गम्लृ – गतौ धातु से सम्बन्धित धातुरूपों के बारे में

जानकारी प्राप्त की । इसके उपरान्त इस इकाई से आत्मनेपदी धातुओं का प्रारम्भ होता है, जिसमें एध–वृद्धौ धातु प्रथम आत्मनेपदी धातु है । अतः इस इकाई में विशेषतः आप **लघुसिद्धान्तकौमुदी अधारित** एध् धातु की लट्–लकार एवं लिट्–लकार की प्रक्रिया के अन्तर्गत आने वाले सूत्रों की व्याख्या के साथ साथ लट् एवं लिट्–लकार की रूपप्रक्रिया की सिद्धि के बारे में भी अध्ययन करेंगे।

16.2 एध् धातु की लट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – टित आत्मनेपदानां टेरे 3/4/79

सूत्रवृत्तिः – टितो लस्यात्मनेपदानां टेरेत्वम्। एधते।

सूत्रानुवाद – टित् लकार के स्थान पर आदेश होने वाले आत्मनेपद प्रत्ययों के टि भाग को एकारादेश हो।

व्याख्या – टितः, आत्मनेपदानाम् टेः, ए यह पदच्छेद है । इस तरह यह चतुष्पदात्मक सूत्र है। टितः यह पद षष्ठी एकवचनान्त है। आत्मनेपदानाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है। टेः यह भी षष्ठी एकवचनान्त है तथा ए यह पद लुप्तप्रथमान्त है। टितः में स्थान षष्ठी है और टित् लकार अर्थात् लट्–लिट्–लुट्–लृट्–लोट् लकार जिनमें टकार इत्संज्ञक है उन टित् लकारों के स्थान पर आत्मनेपदानाम् अर्थात् आत्मने पद होने पर जो त–आताम्–झ इत्यादि नव तङादेश होते हैं अन् के टि भाग यानि "अचोऽन्त्यादि टि" सूत्र से निर्दिष्ट अथवा संज्ञित अन्त्य अच् सहित अग्रिम सम्पूर्ण भाग जो टि है उसके स्थान पर एकारादेश होता है। जैसे त–प्रत्यय में अन्तिम अकार मात्र टि संज्ञक है। आताम्–प्रत्यय में आम् टि भाग है। तो इनके टि भाग को सम्पूर्ण को एकारादेश दोता है। इस प्रकार यह सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ। प्रक्रियाबोध के समय इसकी स्पष्टतर प्रतीति होगी।

यहाँ शङ्का होती है कि लट् के स्थान पर होने वाले क्या सभी आत्मनेपद आदेशों के स्थान पर एत्व होता है ? यदि ऐसा कहते हैं तो "लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे" इस सूत्र से लट् के स्थान पर होने वाले शानच् जिसकि इत्संज्ञा के बाद शेष बचे आन की "तङानावात्मेपदम्" सूत्र से आत्मनेपदसंज्ञा होने के कारण आन के टि के स्थान पर भी एत्व होना चाहिए। तो पचमानः, वर्धमानः, यजमानः इत्यादि में आन के टिरूप अन्तिम अकार को भी एत्व प्रसक्त होने लगेगा।

तो इस शङ्का का समाधान इस प्रकार है कि इस सूत्र में "तिप्तस्झि......" इत्यादि सूत्र की अनुवृत्ति आती है जिससे सूत्र का अर्थ होता है कि तिप्तसादि में जो त–आताम्–इत्यादि नव आत्मनेपदसंज्ञक प्रत्यय है उनके टि भाग को ही एत्वादेश होता है। इस तरह शानच् के आन का ग्रहण तिबादिप्रत्ययोः में न होने के कारण उसके टि भाग के स्थान पर एत्वादेश प्रसक्त नहीं होगा।

उदाहरण : एधते – एध् धातु से "वर्तमाने लट्" सूत्र से लट् लकार करने पर एध्. लट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्..." इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध् त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ़त इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से त प्रत्यय के टि भाग अ को एत्व करने पर एधते रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – आतो ङितः 7/2/81

सूत्रवृत्तिः – अतः परस्य ङितामाकारस्य इय स्यात् – एधेते/एधन्ते।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश हो।

व्याख्या – आतः ङितः यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में "अतो येयः" इस सूत्र से अतः और इय् की अनुवृत्ति होती है। "अङ्गस्य" इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य यह पद 'अतः' इस विशेषणीभूत पञ्चम्यन्त का विशेष्य होता है, जिससे अङ्गस्य में श्रूयमाण षष्ठी पञ्चम्यन्त में परिविर्तत होकर अङ्गात् ऐसा बोध कराती है। अतः और अङ्गात् में परस्पर विशेषण–विशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है, फलतः अदन्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त होगा। 'अतः' पद में जो पञ्चमी है वह दिग्योग पञ्चमी है इस कारण परस्य पद का अध्याहार होगा। अदन्तात् अङ्गात् परस्य अर्थात् 'अदन्त अङ्ग से पर' इतना अर्थ फलित होगा। इस सूत्र में 'ङितः' जो पद में जो षष्ठी है वह अवयव षष्ठी है। अतः ङित् प्रत्यय के अवयव जो आकार है उसको इय् ऐसा आदेश होता है । इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ इस प्रकार होगा – अदन्त अङ्ग से पर में जो ङित प्रत्यय है उसके आकार को इय् आदेश होता है।

उदाहरण : एधेते – एध् धातु से पूर्ववत् लट्, उसके स्थान पर प्रथमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा, ततः शप् विकरण प्रत्यय, शप् की भी शित्वात् सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध्+अ+इय्+ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और आद्गुणः से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ताम् के आम् को एत्व होने पर एधेते रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – थासः से 3/4/80

सूत्रवृत्तिः – टितो लस्य थासः से स्यात्। एधसे, एधेथे, एधध्वे। "अतो गुणे" – एधे, एधावहे, एधामहे।

सूत्रानुवाद – टित् लकार के स्थान पर हुए थास को 'से' आदेश हो।

व्याख्या – थासः, से यह पदच्छेद है । इस सूत्र में "लस्य" इस सूत्र का अधिकार है। 'थासः' स्थान षष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। थास के स्थान पर ऐसा अर्थ लगेगा। 'से' यह लुप्तप्रथमान्त पद है जो कि आदेशपरक है। से आदेश अनेकाल् होने के कारण "अनेकाल्शित् सर्वस्य" इस परिभाषा सूत्र के सहायता से सम्पूर्ण थास् के स्थान पर होगा। तो इस प्रकार टित् लकार के स्थान पर जो आदेश थास् हुआ उस थास् के सम्पूर्ण के स्थान पर से आदेश होता है, इस भाव से समझने पर सूत्र स्पष्टतः पूर्ण होता है।

उदाहरण : एधसे – एध् धातु से लट् लकार में मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय, शप् विकरणप्रत्यय करने के बाद एध्+अ+थास् इस स्थिति में "थासः से" सूत्र से थास् को से आदेश करने पर एधसे रूप सिद्ध होता है।

उदाहरण : एधे – एध् धातु से उत्तमपुरुष एकवचन में इट् प्रत्यय करने पर शबादिकार्य करने के उपरान्त एध्+अ+इ इस अवस्था में 'टित आत्मनेपदानां टेरे' सूत्र से इ को एत्व करने पर एध्+अ+इ इस अवस्था में अकार–एकार को "वृद्धिरेचि" सूत्र से प्राप्त वृद्धि को बाधकर 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप करने पर एधे रूप सिद्ध होता है। इसके बाद लिट् लकार की प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों की व्याख्या जानेंगे।

16.3 एध् धातु की लट् लकार प्रक्रिया

एधन्ते – एध् धातु से "वर्तमाने लट्" सूत्र से लट् लकार करने पर एध्, लट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्....." इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध् झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" इस सूत्र से झ के स्थान पर अन्तादेश करने पर एध्+अ+अन्त इस अवस्था में "अतो गुणे" सूत्र से दोनों अकार के स्थान पर पररूप एकादेश करने पर ''टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से अन्त (झ–प्रत्यय) के टि भाग अ को एत्व करने पर एधन्ते रूप सिद्ध होता है।

एधेथे – एध् धातु से पूर्ववत् लट्, उसके स्थान पर मध्यमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा, ततः शप् विकरण प्रत्यय, शप् की भी शित्वात् सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आथाम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आथाम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध्+अ+इय+थाम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से थाम् के आम् को एत्व होने पर एधेथे रूप सिद्ध होता है।

एधध्वे – एध् धातु से पूर्ववत् लट्, उसके स्थान पर मध्यमपुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा, ततः शप् विकरण प्रत्यय, शप् की भी शित्वात् सार्वधातुकसंज्ञा

करने पर एध्+अ+ध्वम् इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ध्वम् के अ को एत्व होने पर एधध्वे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधावहे – एध् धातु से पूर्ववत् लट्, उसके स्थान पर उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा, ततः शप् विकरण प्रत्यय, शप् की भी शित्वात् सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+वहि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्र से अकार के स्थान पर आकारादेश होने पर एध्+आ+वहि इस स्थिति में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से वहि के इ को एत्व होने पर एधावहे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधामहे – एध् धातु से पूर्ववत् लट्, उसके स्थान पर उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में महिङ् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा, ततः शप् विकरण प्रत्यय, शप् की भी शित्वात् सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+महि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्र से अकार के स्थान पर आकारादेश होने पर एध्+आ+महि इस स्थिति में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से महि के इ को एत्व होने पर एधामहे रूप सिद्ध हो जाता है।

लट् लकार :

एधते, एधेते, एधन्ते।

एधसे, एधेथे, एधध्वे।

एधे, एधावहे, एधामहे।

16.4 एध् धातु की लिट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – इजादेश्च गुरुमतोऽच्छः 3/1/36

सूत्रवृत्तिः – इजादिर्यो धातुर्गुरुमान् ऋच्छ्यत्यन्यस्ततः आम् स्याल्लिटि।

सूत्रानुवाद – ऋच्छति से भिन्न ऐसी इजादि धातु जो गुरुवर्ण से युक्त हो, उस से पर में आम् प्रत्यय हो जाता है लिट् पर में है तो ।

व्याख्या – इजादेः, च, गुरुमतः, अनृच्छः यह पदच्छेद है। इच् (इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ यह प्रत्याहार घटित वर्ण) आदिः यस्य स इजादिः तस्मात् इजादेः, (बहुव्रीहिसमास)। गुरुः अस्त्यस्मिन् इति गुरुमान् (मतुप्–प्रत्ययान्त), तस्मात् गुरुमतः। न ऋच्छ् अनृच्छ्, तस्मात् अनृच्छः (नञ्–तत्पुरुष)। ये तीनों पद पञ्चम्यन्त हैं। "धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्" सूत्र से धातोः इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। अतः पञ्चमी श्रवण से 'पर में' ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है। इजादेः, गुरुमतः, अनृच्छः ये तीनों 'धातोः' के विशेषण हैं। इच् प्रत्याहारघटित वर्ण आदि में हो ऐसे धातु से जो गुरुमान् हो परन्तु ऋच्छ्–धातु (क्योंकि ऋच्छ् धातु इजादि भी है और चकारछकारवर्णों के संयोग के पर में होने से गुरुमान् भी) से भिन्न हो, उस धातु से ऐसा अर्थ सम्पन्न होगा। इस सूत्र में "प्रत्ययः" "परश्च" इन सूत्रों का अधिकार है।

"कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि" सूत्र से लिटि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। सप्तमी के श्रवण से लिटि परे ऐसा अर्थ आएगा। इस प्रकार सभी अनुवृत्त पदों के सम्मेलन से सूत्र का अर्थ इस प्रकार होगा कि ऋच्छ्–धातु से भिन्न इजादि गुरुमान् धातु से आम् प्रत्यय होता है लिट् लकार रे पर में रहने पर।

यदि इस सूत्र में इजादि पद को नहीं पढा जाता और सूत्र का स्वरूप केवल गुरुमतः अनृच्छः ऐसा होता तो तक्ष्, रक्ष् आदि धातुएँ जो ऋच्छ से भिन्न और संयोग पर में होने से गुरुमान् हैं उनसे भी आम् होने लग जाता। अतः अनिष्ट वारण के लिए सूत्र में इजादि पद पढा गया है ऐसा अभिप्राय स्वतः जानना चाहिए।

सूत्र – आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य 1/3/63

सूत्रवृत्तिः – आम्प्रत्ययो यस्मात् इत्यतद्गुणसंविज्ञानो बहुव्रीहिः। आम्प्रकृत्या तुल्यमनुप्रयुज्यमानात् कृञोऽप्यात्मनेपदम्।

सूत्रानुवाद – जिस से आम् प्रत्यय का विधान किया जाता है आम् की उस प्रकृति को आम्प्रत्यय कहते हैं। आम्प्रत्यय आर्थात् आम् की प्रकृति के समान अनुप्रयुज्यमान कृञ् धातु से भी आत्मनेपद होता है।

व्याख्या – आम्प्रत्ययवत्, कृञः, अनुप्रयोगस्य यह पदच्छेद है। त्रिपद सूत्र है। "अनुदात्तङित आत्मनेपदम्" इस सूत्र से आत्मनेपद पद अनुवृत्त होता है। आम्प्रत्ययवत् यह अव्ययपद है। कृञः और अनुप्रयोगस्य यह दोनों षष्ठ्येकवचनान्त है। आम् प्रत्ययो यस्मात् स आम्प्रत्ययः। आम् प्रत्यय जिस से विधान किया गया हो उसे 'आम्प्रत्यय' कहते हैं। आम् प्रत्यय का लिट् में एध आदि धातुओं से विधान किया जाता है, अतः आम के प्रकृतिभूत एध् आदि धातुओं का नाम 'आम्प्रत्यय' हुआ । यहां 'आम्प्रत्यय' शब्द में 'आम् चासौ प्रत्यय आम्प्रत्ययः' इस प्रकार कर्मधारय समास नहीं है अपितु उपर्युक्त प्रकार से अतद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास है। अतद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि में केवल अन्य पदार्थ का ही ग्रहण होता है समस्यमानपदों के अर्थ का अन्वय नहीं होता। यथा–'चित्रगुम् आनय' (जो चितकबरी गायों का स्वामी है उसे उसे लाओ) यहां आनयन–क्रिया में चितकबरी गायों का अन्वय नहीं होता केवल पुरुष को ही लाया जाता है । इसी प्रकार 'आम्प्रत्यय' में भी जिस से आम् प्रत्यय किया जाता है केवल उसी का ही यहां ग्रहण होता है। आम्प्रत्ययेन तुल्यम्–आम्प्रत्ययवत्, 'तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः' इस सूत्र से वतिप्रत्यय। अनुप्रयुज्यत इत्यनुप्रयोगः, कर्मणि घञ्। 'कृञः' और 'अनुप्रयोगस्य' इन दोनों में प्रयुक्तषष्ठी विभक्ति को प्रसंगानुसार पञ्चमीविभक्ति में परिणत कर लेना चाहिये, अथवा सम्बन्धसामान्य में षष्ठी समझनी चाहिये। तदनुसार सूत्रार्थ होगा – (आम्प्रत्ययवत्) जिस धातु से आम् प्रत्यय किया जाता है उस धातु के समान (अनुप्रयोगात् कृञः) अनुप्रयुज्यमान कृञ् धातु से भी आत्मनेपद हो जाता है। जैसे यहाँ एधाञ्चक्रे में एध धातु से आम् प्रत्यय किया जाता है (प्रक्रिया में अधिक स्पष्ट हो जाएगा) तो फल चाहे कर्तृगामी हो या अकर्तृ (पर) गामी दोनों अवस्थाओं में उस से 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' सूत्र के द्वारा जैसे आत्मनेपद

होता है वैसे यहां अनुप्रयुज्यमान कृञ् से भी दोनों अवस्थाओं में (फल चाहे कर्तृगामी हो या अकर्तृगामी) आत्मनेपद का ही प्रयोग होगा, परस्मैपद का नहीं।

यहाँ शङ्का होती है कि आम् प्रत्यय जिससे किया जाये ऐसी धातु यदि आत्मनेपदी हो प्रयुज्यमान कृञ् से परगामी क्रियाफल में परस्मैपद न हो आत्मनेपद ही हो। यह उपर्युक्त सूत्र से सिद्ध हो गया । परन्तु यदि आम्प्रकृतिक धातु परस्मैपदी हो जैसा कि 'गोपायाञ्चकार' आदि में है; तो फिर इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं हो सकेगी । तो अनुप्रयुज्यमान कृञ् से क्रियाफल के कर्तृगामी होने पर आत्मनेपद तथा अकर्तृगामी होने पर परस्मैपद दोनों प्राप्त होंगे । किन्तु हमें वहाँ केवल परस्मैपद करना अभीष्ट होता है, तो वहां कर्तृगामी क्रियाफल में कृञ् से आत्मनेपद का विधान कैसे रोका जाए?

इसका समाधान इस प्रकार से है कि यहां पिछले 'पूर्ववत्सनः' (1/3/62) सूत्र से 'पूर्ववत्' की अनुवृत्ति करके अनुप्रयुज्यमान कृञ् से पूर्ववत् आत्मनेपद हो, यह नया अर्थ कर लिया जाएगा। यह अर्थ 'आम्प्रत्ययवत्' से भी सिद्ध था फिर भी सूत्र का आरम्भ किया गया, अतः 'सिद्धे सत्यारभ्यमाणो विधिः नियमाय भवति' इस नियम के अनुसार नियम कर दिया जाएगा कि कृअनुप्रयुज्यमान कृञ् से यदि आत्मनेपद करना हो तो पहली धातु की तरह ही आत्मनेपद हो, अन्यथा नहीं। 'गोपायाञ्चकार' में पहली धातु गुप् में आत्मनेपद का विधान ही नहीं है, अतः अनुप्रयुज्यमान कृञ् से भी आत्मनेपद नहीं होगा, केवल परस्मैपद ही किया जायेगा। सारांश यह है कि अनुप्रयुज्यमान कृञ् से उसी पद का विधान किया जायेगा जो आम्प्रकृतिक (आम् की प्रकृतिभूत) धातु का होगा। यदि आम्प्रकृतिक धातु आत्मनेपदी हो तो कृञ् से आत्मनेपद और परस्मैपदी हो तो परस्मैपद और यदि वह उभयपदी हो तो उभयपद होगा। जैसे – 'एधाञ्चक्रे' यहां आम्प्रकृतिक एध धातु आत्मनेपदी थी अतः कृञ् से भी आत्मनेपद हुआ है। 'गोपायाञ्चकार' यहां आम्प्रकृतिक गुप् धातु परस्मैपदी था, अतः कृञ् से भी परस्मैपद हुआ है। 'चोरयाञ्चकार, चोरयाञ्चक्रे' यहां आम्प्रकृतिक 'चोरि' धातु 'णिचश्च' सूत्र से उभयपदी थी अतः कृञ् से भी उभयपद हुआ है। प्रस्तुत स्थल में 'एधाम्.+ कृ + लिट्' में आम्प्रकृतिक एध् धातु के आत्मनेपदी होने के कारण लिट के स्थान पर आत्मनेपद प्रत्यय 'त' आदेश हो जाएगा । शेष प्रक्रिया पाठ के अन्त में स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा।

सूत्र – लिटस्तझयोरेशिरेच् 3/4/81

सूत्रवृत्तिः – लिडादेशयोस्तझयोः 'ए'–इरेच्' एतौ स्तः। एधाञ्चक्रे, एधाञ्चक्राते, एधाञ्चक्रिरे। एधाञ्चकृषे, एधाञ्चक्राथे।

सूत्रानुवाद – लिट् के स्थान पर आदेश हुए 'त' और 'झ' प्रत्ययों को क्रमशः एश् और इरेच् आदेश होते हैं।

व्याख्या – लिटः, तझयोः, एशिरेच् यह पदविभाग है। त्रिपद सूत्र है। लिटः यह षष्ठ्येकवचनान्त है। तश्च झश्च तझौ, तयोः तझयोः, इतरेतरद्वन्द्वसमास, स्थानषष्ठी द्विवचनान्त (तकार और झकार के स्थान पर ऐसा अर्थ)। एश् च इरेच् च एशिरेच्, समाहारद्वन्द्वसमासप्रथमान्तपद। तो

इस प्रकार से सूत्रार्थ यह फलित होता है – लिट् के स्थान पर आदेश हुए (तझयोः) अर्थात त और झ प्रत्ययों के स्थान पर एश् और इरेच् आदेश हो जाते हैं। यहां "यथासंख्यमनुदेशः समानाम्" इस परिभाषा सूत्र से 'त' के स्थान पर 'एश्' तथा 'झ' के स्थान पर 'इरेच्' आदेश क्रमशः होता है। एश् में शकार की तथा इरेच् में चकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा है। शित् होने से एश् आदेश तथा अनेकाल होने से इरेच् आदेश सम्पूर्ण त, तथा 'झ' के स्थान पर होंगे। इरेच् में चकार चित्स्वर सम्बन्धी स्वरकार्य के अनुबन्ध है।

ध्यातव्य – यहाँ यह ध्यातव्य है कि "थासः से" के स्थान पर पाणिनि आचार्य थासः सि सूत्र बनाकर उसके टि भाग को एत्व करके से बना सकते थे। इसी प्रकार लिट् लकार के त और झ के स्थान पर क्रमशः इश्–इरिच् आदेश करके टिभाग को एत्व करके एश्–इरेच् सम्पादित कर सकते थे। फिर भी पाणिनि आचार्य ने साक्षात् एकारोच्चारण करके यह ज्ञापित किया कि तङादेशो के टि भाग को एत्व नहीं होता। इसका अन्यत्र फल है कि लुट् में तङादेश डा–रौ–रस् आदेशों को भी एत्व नहीं होता।

उदाहरण – एधाञ्चक्रे – एध् धातु से "परोक्षे लिट्" सूत्र से लिट् लकार करने पर एध् धातु के इजादिगुरुमान् होने से "इजादेश्च गुरुमतोऽनच्छः" सूत्र से लिट् के पर में आम् प्रत्यय करने पर एध्+आम्+लिट् इस अवस्था में "आमः" सूत्र से लिट् का लुक् करने पर एधाम् ऐसा अव्यय बनने पर "कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि" इस सूत्र से लिट्–परक कृ धातु का अनुप्रयोग होने पर एधाम्+कृ+लिट् इस अवस्था में "आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य" सूत्र से आत्मनेपद होने पर प्रथमपुरुष एकवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से त प्रत्यय करने पर एध्+आम्+कृ त इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ+त ऐसा होने पर "लिटस्तझयोरेशिरेच्" सूत्र से त को एश् आदेश अनुबन्ध लोप करके एधाम्+च+कृ+ए इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "किति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "इको यणचि" सूत्र से ऋकार को यणादेश करने पर एधाम्+च+क्र+ए इस अवस्था में मकार को "मोऽनुस्वारः, वा पदान्तस्य" इन सूत्रों से क्रमशः अनुस्वार और परसवर्ण ञकार होने पर एधाञ्चक्रे सिद्ध होता है।

सूत्र – इणः षीध्वंलुङ्–लिटां धोऽङ्गात् 8/3/78

सूत्रवृत्तिः – इण्णन्तादङ्गात् परेषां षीध्वंलुङ्लिटां धस्य ढः स्यात्।

एधाञ्चकृढ्वे। एधाञ्चक्रे, एधाञ्चकृवहे, एधाञ्चकृमहे। एधाम्बभूव। एधामास।

सूत्रानुवाद – इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्ग में) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को मूर्धन्य (ढकार) आदेश हो।

व्याख्या – इणः, षीध्वम्–लुङ्–लिटाम्, धः, अङ्गात् यह पदविभाग है। चतुष्पदात्मक सूत्र है। "अपदान्तस्य मूर्धन्यः" इस सूत्र से मूर्धन्य पद की अनुवृत्ति होती है। इणः यह पञ्चम्यन्त

अङ्गात् पद का विशेषण है। अतः विशेषणत्वात् तदन्तविधि होकर इण्णन्तात् अङ्गात् = इणन्त (जिसके अन्त मे इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल हो, इण् प्रत्याहार सर्वदा पर णकार तक होता है, यह ध्यातव्य है।) अङ्ग से पर में ऐसा अर्थ हो जाता है। षीध्वं च लुङ् च लिट् च षीध्वंलुङ्लिटः, तेषां षीध्वंलुङ्लिटाम् इति इतरेतर द्वन्द्वसमास से षष्ठीबहुवचनान्त, अवयवषष्ठी। इनके अवयव धकार को ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। मूर्धन्यशब्द धकार के स्थान पर होने वाले आदेश का बोध कराता है। स्थानेऽन्तरतमः इस सूत्र के माध्यम से ध के स्थान पर होने वाला मूर्धन्य आदेश संवार–नाद–घोष–महाप्राण यत्नवान् ढकार ही होता है। इसलिए सूत्रवृत्ति में ग्रन्थकार ने धकार को ढकार होता है ऐसा साक्षात् कह दिया है। इस प्रकार से समुदित सूत्रार्थ – इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्ग में) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को मूर्धन्य वर्ण ढकार आदेश हो ये फलित होता है।

उदाहरण – एधाञ्चकृढ्वे – एध् धातु से पूर्ववत् आमादिप्रत्यय, कृ का अनुप्रयोग इत्यादि करने पर मध्यमपुरुष बहुवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से ध्वम् प्रत्यय करने पर एधाम्+कृ+ध्वम् इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ+ध्वम् ऐसा होने पर "इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्" सूत्र से ध को मूर्धन्य ढकारादेश करने पर एधाम्+च+कृ+ढ्वम् इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "किति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ध्वम् के टिभाग को एत्व करने पर एधाम्+च+कृ+ढ्वे इस अवस्था में मकार को "मोऽनुस्वारः, वा पदान्तस्य" इन सूत्रों से क्रमशः अनुस्वार और परसवर्ण ञकार होने पर एधाञ्चकृढ्वे सिद्ध होता है।

16.5 एध् धातु की लिट् लकार प्रक्रिया

एधाञ्चक्राते – एध् धातु से "परोक्षे लिट्" सूत्र से लिट् लकार करने पर एध् धातु के इजादिगुरुमान् होने से "इजादेश्च गुरुमतोऽनच्छः" सूत्र से लिट् के पर में आम् प्रत्यय करने पर एध्+आम्+लिट् इस अवस्था में "आमः" सूत्र से लिट् का लुक् करने पर एधाम् ऐसा अव्यय बनने पर "कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि" इस सूत्र से लिट्–परक कृ धातु का अनुप्रयोग होने पर एध्+आम्+कृ+लिट् इस अवस्था में "आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य" सूत्र से आत्मनेपद होने पर प्रथमपुरुष द्विवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से आताम् प्रत्यय करने पर एधाम्+कृ +आताम् इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ+आताम् ऐसा होने पर "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से आताम् के टिभाग आम् के स्थान पर एत्व करने पर एधाम्+च+कृ+आते इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "किति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "इको यणचि" सूत्र से ऋकार को यणादेश करने पर एधाम्+च+क्र+आते इस अवस्था में वर्णसम्मेलन होने पर एधाञ्चक्राते सिद्ध होता है।

एधाञ्चक्रिरे – एध् धातु से "परोक्षे लिट्" सूत्र से लिट् लकार करने पर एध् धातु के इजादिगुरुमान् होने से "इजादेश्च गुरुमतोऽनच्छः" सूत्र से लिट् के पर में आम् प्रत्यय करने पर एध्+आम्+लिट् इस अवस्था में "आमः" सूत्र से लिट् का लुक् करने पर एधाम् ऐसा अव्यय बनने पर "कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि" इस सूत्र से लिट्–परक कृ धातु का अनुप्रयोग होने पर एधाम्+कृ+लिट् इस अवस्था में "आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य" सूत्र से आत्मनेपद होने पर प्रथमपुरुष बहुवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि" इत्यादिसूत्र से झ प्रत्यय करने पर एधाम्+कृ+झ इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ +झ ऐसा होने पर "लिटस्तझयोरेशिरेच्" सूत्र से झ को इरेच् आदेश अनुबन्ध लोप करके एधाम्+च+कृ+इरे इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "क्ङिति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "इको यणचि" सूत्र से ऋकार को यणादेश करने पर एधाम्+च+क्र+इरे इस अवस्था में मकार को "मोऽनुस्वारः, वा पदान्तस्य" इन सूत्रों से क्रमशः अनुस्वार और परसवर्ण ञकार होने पर एधाञ्चक्रिरे सिद्ध होता है।

एधाञ्चकृषे – एध् धातु से पूर्ववत् आमादिप्रत्यय, कृ का अनुप्रयोग इत्यादि करने पर मध्यमपुरुष एकवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से थास् प्रत्यय करने पर एधाम्+कृ+थास् इस अवस्था में "थासः से" सूत्र से थास् के स्थान पर 'से' आदेश करने पर एधाम्+कृ+से इस अवस्था में 'से' प्रत्यय के वलाद्यार्धधातुक होने पर भी "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम नहीं हो सकेगा क्योंकि कृ धातु के एकाच् होने कारण "एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्" सूत्र से इट् निषेध हो जाता है। तो इस प्रकार एधाम्+कृ+इसे इस अवस्था मेंद्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ+से ऐसा होने पर इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "क्ङिति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से से के सकार को मूर्धन्य ष–आदेश करने पर एधाम+्च+कृ+षे इस अवस्था में वर्णसम्मेलन होने पर एधाञ्चकृषे सिद्ध होता है।

एधाञ्चक्राथे – प्रथम पुरुष द्विवचन की तरह मध्य पुरुष द्विवचन में आताम् के स्थान पर आथाम् प्रत्यय करने पर एधाञ्चक्राते की तरह समान प्रक्रिया करने पर एधाञ्चक्राथे रूप सिद्ध होता है।

एधाञ्चक्रे – एध् धातु से "परोक्षे लिट्" सूत्र से लिट् लकार करने पर एध् धातु के इजादिगुरुमान् होने से "इजादेश्च गुरुमतोऽनच्छः" सूत्र से लिट् के पर में आम् प्रत्यय करने पर एध्+आम्+लिट् इस अवस्था में "आमः" सूत्र से लिट् का लुक् करने पर एधाम् ऐसा अव्यय बनने पर "कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि" इस सूत्र से लिट्–परक कृ धातु का अनुप्रयोग होने पर एधाम्+कृ+लिट् इस अवस्था में "आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य" सूत्र से आत्मनेपद होने पर उत्तमपुरुष एकवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से इट् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप करने पर एधाम्+कृ+इट् इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने

पर एधाम्+च+कृ+ई ऐसा होने पर "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से इ–प्रत्यय को एत्व करके एधाम्+च+कृ+ए इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "क्ङिति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "इको यणचि" सूत्र से ऋकार को यणादेश र् करने पर एधाम्+च+क्र+ए इस अवस्था में मकार को "मोऽनुस्वारः, वा पदान्तस्य" इन सूत्रों से क्रमशः अनुस्वार और परसवर्ण ञकार होने पर एधाञ्चक्रे रूप सिद्ध होता है।

एधाञ्चकृवहे – एध् धातु से पूर्ववत् आमादिप्रत्यय, कृ का अनुप्रयोग इत्यादि करने पर उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में "तिप्तस्झि..." इत्यादिसूत्र से वहि प्रत्यय करने पर एधाम्+कृ +वहि इस अवस्था में 'वहि' प्रत्यय के वलाद्यार्धधातुक होने पर भी "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम नहीं हो सकेगा क्योंकि कृ धातु के एकाच् होने कारण "एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्" सूत्र से इट् निषेध हो जाता है। तो इस प्रकार एधाम+्कृ+वहि इस अवस्था में द्वित्व–अभ्याससंज्ञा–उरदत्व–हलादिशेष–कुहोश्चु चुत्व करने पर एधाम्+च+कृ+वहि ऐसा होने पर इस अवस्था में कृ के ऋकार को "सार्वधातुकार्धधातुकयोः" सूत्र से गुण प्राप्त होने पर "असंयोगाल्लिट् कित्" सूत्र से लिट् को कित्व होने से "क्ङिति च" सूत्र से गुण निषेध होने पर "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से से के वहि के इकार (टिभाग) को एत्व करने पर एधाम्+च+कृ+वहे इस अवस्था में वर्णसम्मेलन होने पर एधाञ्चकृवहे रूप सिद्ध होता है।

एधाञ्चकृमहे – इसकी प्रक्रिया पूर्णतः एधाञ्चकृवहे की तरह ही है। केवल वहि के स्थान पर महिङ् प्रत्यय करना है।

एधाम्बभूव – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से जब भू धातु का अनुप्रयोग करते है तो भू धातु को लिट् की तरह द्वित्वादि कार्य करके बभूव बनाना है । जो कि आप भू धातु की प्रक्रिया के समय पढ़ चुके है। इस प्रकार एधाम्बभूव, एधाम्बभूवतुः, इत्यादि रूप सिद्ध हो जाएंगें ।

यथा – एधाम् +भू + लिट् –– (तिप्तस्झि...) एधाम्+भू+तिप् –– (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से तिप् को णल् आदेश) एधाम्+भू+अ (णल्) –– (भुवो वुग्लुङ्लिटोः) एधाम्+भू वुक्+अ –– एधाम्+भू व्+अ (लिटिधातोरनभ्यासस्य – द्वित्व) एधाम् + भूव् भूव् अ –– (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः, हलादिशेषः) एधाम्+भु भूव् अ –– (भवतेरः से उकार को अकार) एधाम्+भ भूव् अ –– (अभ्यासे चर्च से जश्त्व) एधाम् + ब भूव् अ = एधाम्बभूव।

एधाम्बभूवतुः – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से भू धातु का अनुप्रयोग करने पर भू धातु को लिट् की तरह द्वित्वादि कार्य करके प्रथम पुरुष द्विवचन में बभूवतुः बनाना है । यथा –

एधाम्+भू+लिट् – (तिप्तस्झि...) एधाम्+भू+तस् – (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से तस् को अतुस् आदेश) एधाम्+भू+अतुस् – (भुवो वुग्लुङ्लिटोः) एधाम् + भू वुक्+अतुस् – एधाम्+भू व् + अतुस् (लिटिधातोरनभ्यासस्य– द्वित्व) एधाम्+भूव् भूव्+अतुस् – (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः,

हलादिशेषः) एधाम्+भु भूव्+अतुस् – (भवतेरः से उकार को एकार) एधाम्+भ भूव्+अतुस् – (अभ्यासे चर्च से जश्त्व) एधाम्+ब भूव्+अतुस् – सस्य रुत्वे विसर्गे= एधाम्बभूवतुः।

एधाम्बभूविथ – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से भू धातु का अनुप्रयोग करने पर भू धातु को लिट् की तरह द्वित्वादि कार्य करके मध्यम पुरुष एकवचन में बभूविथ बनाना है । यथा – एधाम्+ भू+लिट् – (तिप्तस्झि...) एधाम्+भू+सिप् – (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से सिप् को थल् आदेश) एधाम् + भू+थ (थल्) – (भुवो वुग्लुङ्लिटोः) एधाम् + भू + वुक्+थ – एधाम् + भू+ व्+थ (लिटिधातोरनभ्यासस्य – द्वित्व) एधाम्+ भूव् भूव्+थ – (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः, हलादिशेषः) एधाम् + भु भूव्+थ – (भवतेरः से उकार को एकार) एधाम्+भ भूव्+थ – (अभ्यासे चर्च से जश्त्व) एधाम्+ब भूव्+थ – (आर्धधातुकस्येड्वलादेः सूत्र से इट् आगम) एधाम्+ ब भूव्+इ थ – वर्णसम्मेलने = एधाम्बभूविथ।

एधाम्बभूविव – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से भू धातु का अनुप्रयोग करने पर भू धातु को लिट् की तरह द्वित्वादि कार्य करके उत्तम पुरुष द्विवचन में बभूविव बनाना है । यथा – एधाम्+भू+लिट् – (तिप्तस्झि...) एधाम्+ भू+ सिप् – (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से वस् को व आदेश) एधाम् + भ+व – (भुवो वुग्लुङ्लिटोः) एधाम्+ भू वुक्+व – एधाम्+ भू व्+व (लिटिधातोरनभ्यासस्य – द्वित्व) एधाम्+ भूव् भूव्+व – (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः, हलादिशेषः) एधाम् + भु भूव्+व – (भवतेरः से उकार को एकार) एधाम्+भ भूव्+व – (अभ्यासे चर्च से जश्त्व) एधाम्+ब भूव्+व – (आर्धधातुकस्येड्वलादेः सूत्र से इट् आगम) एधाम्+ ब भूव् + इ व – वर्णसम्मेलने = एधाम्बभूविव ।

एधामास – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से जब अस् धातु का अनुप्रयोग करते है तो अस् धातु को अत् धातु की प्रक्रिया की तरह जैसे वहाँ आत, आततु, आतुः इत्यादि बनाया उसी तरह यहाँ आस, आसतुः, आसुः इत्यादि बनाने पर एधामास, एधामासतुः इत्यादि रूप सिद्ध हो जाते हैं ।

यथा – एधाम् + अस्+ लिट् –– (तिप्तस्झि...) एधाम्+ अस् + तिप् –– (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से तिप् को णल् आदेश) एधाम्+ अस्+ अ (णल्) –– (लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व) एधाम्+ अस् अस्+ अ –– (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः) एधाम्+ अस् अस्+अ –– (हलादिशेषः) एधाम्+ अअस्+ अ –– (अत आदेः से अभ्यास अकार को दीर्घ) एधाम् + आअस्+अ –– (अत उपधायाः से उपधावृद्धि) एधाम्+आ आस्+ अ –– (अकः सवर्णे दीर्घः) एधाम्+आस् अ = एधामास।

एधामासतुः – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से जब अस् धातु का अनुप्रयोग करने पर प्रथम पुरुष द्विवचन में एधामासतुः रूप सिद्ध होता है ।

यथा – एधाम् + अस् + लिट् –– (तिप्तस्झि...) एधाम्+ अस् + तिप् –– (परस्मैपदानां णलतुस् सूत्र से तस् को अतुस् आदेश) एधाम् + अस् + अतुस् –– (लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व) एधाम्+ अस् अस्+अतुस् –– (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः) एधाम् + अस् अस्+अतुस् ––

(हलादिशेषः) एधाम् + अ अस्+ अतुस् –– (अत आदेः से अभ्यास अकार को दीर्घ) एधाम् + आ अस्+ अतुस् –– (अत उपधायाः से उपधावृद्धि) एधाम् + आ आस्+ अतुस् ––(अकः सवर्णे दीर्घः) एधाम्+ आस्+अतुस् इसके बाद सस्य रुत्वे विसर्गे= एधामासतुः रूपसिद्धि लभ्यमान है।

एधामासिथ – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके एधाम् से जब अस् धातु का अनुप्रयोग करने पर मध्यम पुरुष एकवचन में एधामासिथ रूप सिद्ध होता है । यथा –

एधाम्+अस्+लिट् –– (तिप्तस्झि...) एधाम् + अस्+ सिप् –– (परस्मैपदानां णलतुस सूत्र से सिप् को थल् आदेश) एधाम् + अस्+थ (थल्) –– (लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व) एधाम् +अस् अस्+थ –– (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः) एधाम्+ अस् अस् +थ –– (हलादिशेषः) एधाम्+ अ अस्+थ –– (अत आदेः से अभ्यास अकार को दीर्घ) एधाम्+ आ अस्+थ –– (अत उपधायाः से उपधावृद्धि) एधाम्+आ आस्+थ –– (आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इट् आगम) एधाम् + आस्+इ थ इसके बाद वर्णसम्मेलने= एधामासिथ।

एधामासिव – लिट् में ही एधाञ्चक्रे की तरह पूर्ववत् प्रक्रिया करके सिद्ध किया जा सकता है जैसे कि एधाम् से जब अस् धातु का अनुप्रयोग करने पर उत्तम पुरुष द्विवचन में एधामासिव रूप सिद्ध होता है । यथा –

एधाम्+ अस्+ लिट् –– (तिप्तस्झि...) एधाम्+ अस्+वस् –– (परस्मैपदानां णलतुस्... सूत्र से वस् को व आदेश) एधाम्+ अस्+व –– (लिटिधातोरनभ्यासस्य से द्वित्व) एधाम् + अस् अस्+व –– (पूर्वोभ्यासः, ह्रस्वः) एधाम् + अस् अस्+व –– (हलादिशेषः) एधाम्+ अ अस्+व –– (अत आदेः से अभ्यास अकार को दीर्घ) एधाम्+ आ अस्+व –– (अत उपधायाः से उपधावृद्धि) एधाम्+ आ आस्+व –– (आर्धधातुकस्येड्वलादेः से इट् आगम) एधाम् + आस् + इ व इसके बाद वर्णसम्मेलने = एधामासिव इति रूपसिद्धिः।

इस प्रकार यह एध् धातु की लिट् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ उपरोक्त सिद्धियों के अनुसार संपन्न होता है।

लिट् लकार :

(कृ अनुप्रयोगपक्षे)

एधाञ्चक्रे, एधाञ्चक्राते, एधाञ्चक्रिरे।

एषाञ्चकृषे, एधाञ्चक्राथे, एधाञ्चकृढ्वे।

एधाञ्चक्रे, एधाञ्चकृवहे, एधाञ्चकृमहे।

(भू अनुप्रयोगपक्षे)

एधाम्बभूव, एधाम्बभूवतुः, एधाम्बभूवुः।

एधाम्बभूविथ, एषाम्बभूवथुः, एषाम्बभूव।

एधाम्बभूव, एषाम्बभूविव, एधाम्बभूविम।

(अ अनुप्रयोगपक्षे)

एधामास, एधामासतुः, एधामासुः।

एधामासिथ, एधामासथुः, एधामास।

एधामास, एधामासिव, एधामासिम।

16.6 सारांश

इस इकाई के पाठ में आपने एध धातु जो कि आत्मनेपदी धातुओं के क्रम में प्रथम धातु है, उसके बारे में अध्ययन किया। मुख्यतया लट् व लिट् लकार की प्रक्रिया में उपयोग आने वाले सूत्रों की विस्तार से व्याख्या का अधिगमन किया। यह सूत्र क्रमशः इस प्रकार हैं – टित आत्मनेपदानां टेरे, आतो ङितः, थासः से, इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः, आम्प्रत्ययवत् कृञोनुप्रयोगस्य, लिटस्तझयोरेशिरेच् और इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्। इनमें टित आत्मनेपदानां टेरे सूत्र लट् के स्थान पर होने वाले आत्मनेपदसंज्ञक प्रत्ययों के टिभाग को एत्व करता है। आतो ङितः सूत्र अदन्त अङ्ग से पर ङित् प्रत्ययों के आकार को इय् आदेश करता है। थासः से सूत्र थास् के स्थान पर से आदेश करता है। ये तीनों सूत्र लट् प्रक्रिया में उपयोग में आते हैं। इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः सूत्र ऋच्छधातु से भिन्न इजादिगुरुमान् धातु से आम् प्रत्यय का विधान करता है लिट् के पर में होने पर। आम्प्रत्ययवत् सूत्र के द्वारा जिस धातु से आम् प्रत्यय किया गया हो ऐसी आम्प्रत्ययप्रकृतिक धातु से कृञ् धातु का अनुप्रयोग करने पर कृञ् धातु से भी आत्मनेपद किया जाता है। लिटस्तझयोरेशिरेच् सूत्र लिट् लकार के स्थान पर आए त और झ प्रत्यय के स्थान पर क्रमशः एश् और इरेच् आदेश का विधान करता है। इणः षीध्वंलुङ्.... यह सूत्र इणनन्त अङ्ग से पर में विद्यमान षीध्वम्–शब्द के, लुङ् और लिट् के धकार को ढकारादेश करता है। इस प्रकार सभी सूत्रों का आपको संक्षेप में पुनः स्मरण हो गया है कि किस सूत्र के द्वारा किस स्थिति में क्या कार्य किया जाता है। तथा उन सूत्रों से सम्बद्ध उदाहरणों की प्रक्रिया का भी अध्ययन आपने इस इकाई में किया।

16.7 शब्दावली

टित् – ट वर्ण है, इत्संज्ञक जिसका वह टित् कहलाता है।

टेः – टि संज्ञक का। टि संज्ञा "अचोऽन्त्यादि टि" सूत्र के द्वारा की जाती है।

ङित् – ङकार है, इत्संज्ञक जिसका वह ङित् है। "आतो ङितः" इस सूत्र में यह पद आया है। आताम् प्रत्यय में यद्यपि ङकार इत्संज्ञक वर्ण उपलब्ध नहीं है तो भी सार्वधातुकमपित् इस सूत्र के माध्यम से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय भी ङित् की तरह होता है ऐसा अतिदेश कर दिया जाता है।

इजादि – इच् प्रत्याहार के वर्ण आदि में हो जिस धातु के वह इजादिधातु।

अतद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि – बहुव्रीहि समास अन्यपदार्थ प्रधान होता है। तो इस पद का विग्रह इस प्रकार होगा : तद्गुणानां संविज्ञानम् = तद्गुणसंविज्ञानम्, तद्गुणसंविज्ञानं यत्र बहुव्रीहौ तत् तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहिः। तस्य = अन्यपदार्थस्य गुणाः = विशेषणानि वर्तिपदार्थरूपाणि तद्गुणाः, तेषां संविज्ञानं क्रियान्वयितया विज्ञानम् यत्र बहुव्रीहौ । अर्थात् अन्यपदार्थ के विशेषणीभूत पदार्थों का जिन्हें वर्तिपदार्थ कहते हैं, उनका क्रिया में अन्वय होता है, वहीं तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि कहलाता है। उससे विपरीत जिस समास में वर्तिपदार्थों का क्रिया में अन्वय न हो वह अतद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि। तद्गुणसंविज्ञान का उदाहरण – द्विवासा देवदत्तं भोजय, लम्बकर्णं भोजय। यहाँ भुजि क्रिया में कपड़ों का और लम्बे कर्णों का अन्वय नहीं होने पर भी समवायसंयोगादिसम्बन्ध से वे अन्यपदार्थ (देवदत्त) से सन्निहित हैं। इसके विपरीत अतद्गुणसंविज्ञान में चित्रगुम् आनय उदाहरण को देखें तो पता चलेगा कि चितकबरी गायें है जिसकी उसे लाओ यह कहने पर केवल गायों के स्वामी का आनयन होता है न कि गायों का।

शित् व अनेकाल् आदेश – जिसमें शकार की इत्संज्ञा हुई हो वे और जो आदेश अनेकाल् (अनेकवर्ण वाले क्योंकि अल् का अर्थ वर्णमात्र है) हो वे आदेश सम्पूर्ण स्थानी के स्थान पर होते हैं।

इण् प्रत्याहार – इण् प्रत्याहार अ इ उ ण् सूत्र के इकार से लेकर लण् सूत्र के णकार तक होता है।

षीध्वम् – षीध्वम् शब्द से आशीर्लिङ् में सीयुट् आगम व ध्वम् के संयोग से बने षीध्वम् का ग्रहण होता है।

16.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य भीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)

2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेव स्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित

3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहित

4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वय सहित

16.9 अभ्यास प्रश्न

1. "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र किसका विधान करता है?

2. 'एधसे' की सिद्धि कीजिए।

3. "लिटस्तझयोरेशिरेच्" सूत्र की व्याख्या कीजिए।

4. एध् धातु लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन की रूपसिद्धि कीजिए।

5. "इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्" सूत्र की व्याख्या कीजिए।

इकाई 17 एध् धातु (आत्मनेपद) लुट् एवं लृट् लकार

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 एध् धातु की लुट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

17.3 एध् धातु की लुट् लकार प्रक्रिया

17.4 एध् धातु की लृट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

17.5 एध् धातु की लृट् लकार प्रक्रिया

17.6 सारांश

17.7 शब्दावली

17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.9 अभ्यास प्रश्न

17.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- एध् वृद्धौ इस धातु के लुट् एवं लृट् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढेंगे।
- लुट् एवं लृट् प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से जानेंगे।
- लुट् एवं लृट् प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- सूत्रों के व्याख्यानुक्रम में कौशल प्राप्त करेंगे; तथा
- एध् धातु के लुट् एवं लृट् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातुरूपों को जानकर उनका प्रयोग करने में समर्थ हो पाएंगे।

17.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई में आपने एध् धातु की लट् व लिट् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या का विस्तार से अध्ययन किया। साथ ही सूत्रों के उदाहरण स्वरूप प्रक्रिया के क्रम का भी अभ्यास आपने किया। इस पाठ में आप **लघु सिद्धान्त कौमुदी आधारित** एध् धातु की लुट् एवं लृट् लकार की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया मे आने वाले सूत्रों का व्याख्यान सहित विस्तार से अध्ययन करेंगें। प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों

में यदि कोई विशेष अंश भी व्याख्यातव्य है, तो उसका भी विवेचन इस पाठ में किया जाएगा। जैसे कि पूर्व पाठ में "लिटस्तझयोरेशिरेच्" सूत्र में एश्–इरेच् आदेशों में एकारोच्चारण क्यों किया गया तथैव "आम्प्रत्ययवत्" सूत्र में प्रसङ्गोपात्त अतद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि क्या है, इत्यादि का विशेषतः विस्तार से विवेचन किया। तो इसी क्रम में आगे चलते हैं कि लुट् लकार में एध् धातु के रूप हैं : एधिता, एधितारौ, एधितारः। एधितासे, एधितासाथे। इन रूपों में कोई विशेष कार्य भू धातु की प्रक्रिया से भिन्न नहीं होने से ग्रन्थकार ने इनका साक्षात् निर्देश करके मध्यम पुरुष बहुवचन में एधिताध्वे रूप में एक नया सूत्र लगेगा, तो लुट् लकार सम्बन्धित उस सूत्र को निर्दिष्ट किया है। इसी तरह उत्तम पुरुष में भी नवीन सूत्र की आवश्यकता है। अतः इन सूत्रों की व्याख्या का उपक्रम आगे इस प्रकार से सिद्ध होता है।

17.2 एध् धातु की लुट् लकार में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

यद्यपि एध् धातु से लुट् लकार करने पर मध्यमपुरुष बहुवचन में ही नया सूत्र प्रयुक्त होता है; तथापि पूर्व में सीखी हुई लुट् प्रक्रिया का पुनः स्मरण कराने हेतु आपके समक्ष आरम्भ के कुछ रूपों की प्रक्रिया को भी बताया जा रहा है तथा पूर्व में आए मुख्य सूत्र को भी हम यहाँ और अधिक स्पष्टीकरण हेतु व्याख्यात करेंगे।

सूत्र – लुटः प्रथमस्य डारौरस 2/4/85

सूत्रवृत्तिः – डा, रौ, रसः एते क्रमात् स्युः।

सूत्रानुवाद – लुट् के प्रथम पुरुष के स्थान पर क्रमशः डा, रौ, रस् आदेश हों (अर्थात ऐसा आदेश है)।

व्याख्या – लुटः, प्रथमस्य, डारौरसः यह पदविभाग है। लुटः यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। प्रथमस्य पद भी षष्ठी एकवचनान्त है। प्रथमस्य से प्रथम पुरुष के तीनों वचनों के प्रत्ययों का बोध होता है। यह तीन प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों के स्वीकार किए जाते हैं। डा, रौ एवं रस् ये तीन आदेशात्मक हैं जिनका विधान प्रथमपुरुष प्रत्ययों के स्थान पर किया जा रहा है। यहाँ प्रथमपुरुष से तिप्, तस्, झि तथा त, आताम्, झ यह छः प्रत्यय लिए जाते हैं क्योकि प्रथमस्य इस प्रकार का सामान्य निर्देश होने से परस्मैपद या आत्मनेपद ऐसे विशेष रूप से नही कहा गया है। तो इस प्रकार स्थानी प्रत्यय तो छः हो गए, लेकिन आदेश तो तीन ही हैं; डा, रौ, रस्। तो फिर यहाँ कैसे यथासंख्य परिभाषा से तिप्, तस्, झि तथा त, आताम्, झ को क्रमशः डा, रौ, रस् आदेश होंगे। तो इस शङ्का के समाधान में भाष्य में कहा है कि यहाँ डाश्च रौश्च रस् च डारौरसः ऐसा इतरेतरद्वन्द्व समास करके डारौरसश्च डारौरसश्चेति ऐसा एकशेष करने पर डारौरसः यह छः प्रत्ययों का बोध कराता है। इस प्रकार परस्मैपदसंज्ञक तीन तिप्, तस्, और झि प्रत्ययों के स्थान पर क्रमशः डा, रौ, रस् आदेश तथा आत्मनेपदसंज्ञक त, आताम्, झ तीन प्रत्ययों के स्थान पर क्रमशः डा, रौ, रस् यह आदेश हो जाते हैं। अतः इस प्रकार यथासंख्य परिभाषा की प्रवृत्ति में कोई बाधा नहीं होती।

ध्यातव्य – यहाँ यह ध्यातव्य है कि "थासः से" के स्थान पर पाणिनि आचार्य थासः सि सूत्र बनाकर उसके टि भाग को एत्व करके 'से' बना सकते थे। इसी प्रकार लिट् लकार के त और झ के स्थान पर क्रमशः इश्–इरिच् आदेश करके टिभाग को एत्व करके एश–इरेच् सम्पादित कर सकते थे। फिर भी पाणिनि आचार्य ने साक्षात् एकारोच्चारण करके यह ज्ञापित किया कि तङादेशो के टि भाग को एत्व नहीं होता। इसका अन्यत्र फल है कि लुट् में तङादेश डा–रौ–रस् आदेशों को भी एत्व नहीं होता।

एधिता – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक त प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+त इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+तइस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् तास् का आद्यवयव होगा) एध् इ+तास्+तइस अवस्था में "लुटः प्रथमस्य डारौरसः" इस सूत्र से त के स्थान पर डा सर्वादेश करने पर, ड का अनुबन्धलोप करने पर, एध् इ+तास्+आ इस अवस्था में डित्त्वसामर्थ्य से भसंज्ञक नहीं होने पर भी तास् के टि यानि आस् भाग को लोप करने पर एधिता रूप सिद्ध होता है।

एधितारौ – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक आताम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्आताम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+आताम् इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् तास् का आद्यवयव होगा) एध् इ+तास्+आताम् इस अवस्था में "लुटः प्रथमस्य डारौरसः" इस सूत्र से आताम् के स्थान पर रौ सर्वादेश करने पर, एध् इ+तास्+रौ इस अवस्था में "रि च" सूत्र से तास् के स को लोप करने पर एधितारौ रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – धि च 8/2/25

सूत्रवृत्तिः – धादौ प्रत्यये परे सस्य लोपः। एधिताध्वे।

सूत्रानुवाद – धकारादि प्रत्यय परे होने पर सकार का लोप हो।

व्याख्या – धि, च यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। धि सप्तमी एकवचनान्त है। च अव्ययपद है। 'रात्सस्य' सूत्र से सस्य पद की अनुवृत्ति होती है। 'संयोगान्तस्य लोपः' सूत्र से लोपः पद की अनुवृत्ति होती है। यहाँ प्रत्यये का अध्याहार करके सप्तम्यन्त धि को उसका विशेषण बनाकर तदन्तविधि की अपवादभूत परिभाषा 'यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे' से तदादि

विधि करके धकारादि प्रत्यये परे ऐसा अर्थ कर लेंगें। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्रार्थ यह होगा कि धकारादि प्रत्यय के पर में रहने पर सकार का लोप होता है।

उदाहरण – एधिताध्वे – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक ध्वम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+ध्वम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+ध्वम् इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् तास् का आद्यवयव होगा) एध् इ+तास्+ध्वम् इस अवस्था में "धि च" सूत्र से तास् के सकार का लोप और "टित आत्मनेपदानां टेरे" से ध्वम् के टि को एत्व करने पर एधिताध्वे सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – ह एति 7/4/52

सूत्रवृत्तिः – तासस्त्योः सस्य हः स्यादेति परे।

एधिताहे, एधितास्वहे, एधितास्महे।

एधिष्यते, एधिष्येते, एधिष्यन्ते।

एधिष्यसे, एधिष्येथे, एधिष्यध्वे।

एधिष्ये एधिष्यावहे, एधिष्यामहे।

सूत्रानुवाद – तास् और अस् के सकार को हकारादेश हो एकार परे रहने पर।

व्याख्या – ह, एति यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। हः यह पद प्रथमाविभक्त्यन्त पद है (हकार में अकार उच्चारणार्थ है अतः होने वाला आदेश ह् होगा)। एति यह सप्तमी एकवचनान्त है। जिससे एकारे परे ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। "सः स्यार्धधातुके" सूत्र से सः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवृत्त होता है। सस्य ऐसा अर्थ है। "तासस्त्योर्लोपः" सूत्र से तासस्त्योः की अनुवृत्ति होती है। (तास् च अस्ति च तासस्ती, तयोः तासस्त्योः (इतरेतरद्वन्द्वगर्भित षष्ठी तत्पुरुष) ऐसा विग्रह है। यह आपको पुनः स्मरण कराया है) तास् और अस्ति (अस् धातु का श्तिपा निर्देश) के सकार को। तो इस प्रकार सूत्रार्थ यह सम्पन्न होगा – तास् और अस् के सकार को हकारादेश हो एकार परे रहने पर। एध् धातु का उदाहरण एधिताहे तथा अस् धातु का उदाहरण व्यतिहे है।

उदाहरण – एधिताहे – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक इट् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+इट् इस अवस्था में अनुबन्धलोपोपरान्त शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध

लोप करके एध्+तास्+इ इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् तास् का आद्यवयव होगा) एध् इ+तास् इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" से इमात्र को भी व्यपदेशिवद्भाव से टि मानकर इकार को एत्व करने पर एध् इ+तास्+ए इस अवस्था में "ह एति" सूत्र से तास् के सकार को हकारादेश करने पर एधिताहे रूप सिद्ध हो जाता है।

17.3 एध् धातु की लुट् लकार प्रक्रिया

एधितारः – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक झ प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+झ इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+झ इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करने के पश्चात् "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् तास् का आद्यवयव होगा) एध् इ+तास्+झ इस अवस्था में "लुटः प्रथमस्य डारौरसः" इस सूत्र से झ के स्थान पर रस् सर्वादेश करने पर, एध् इ+तास्+रस् इस अवस्था में "रि च" सूत्र से तास् के स को लोप करने पर एध् इ+ता+रस् इस अवस्था में सकार को रूत्व विसर्ग करके एधितारः रूप सिद्ध किया जाता है।

एधितासे – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक थास् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+थास् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+थास् इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इतास्+थास् इस अवस्था में "थासः से" सूत्र से थास् के स्थान पर 'से' आदेश करने पर एध् इ+तास्+से इस अवस्था में "तासस्त्योर्लोपः" सूत्र से तास् के सकार का लोप करने पर एधितासे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधितासाथे – एध् धातु से "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक आथाम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+आथाम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+आथाम् इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करने पर "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+तास्+आथाम् इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से आथाम् के टि भाग को एत्व करने पर एध् इ+तास्+आथे इस अवस्था में वर्ण सम्मेलन करने पर एधितासाथे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधितास्वहे – एध् धातु "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक वहि प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+वहि इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास+्वहि इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+तास्+वहि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" से वहि के टिभाग इकार को एत्व करने पर एध् इ+तास्+वहे ऐसा मिलाने पर एधितास्वहे रूप सिद्ध हो जाता है। अन्यत्र सर्वत्र प्रक्रिया समान है, कोई विशेष नहीं।

एधितास्महे – एध् धातु "अनद्यतने लुट्" इस सूत्र से लुट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक महिङ् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+महि इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर तासि विकरण प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप करके एध्+तास्+महि इस अवस्था में तास् की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+तास्+महि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" से महि के टिभाग इकार को एत्व करने पर एध् इ+तास्+महे ऐसा मिलाने पर एधितास्वहे रूप सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार सर्वत्र प्रक्रिया समान है, कोई विशेष नहीं। उपरोक्त चर्चानुसार एध् धातु की लुट् लकार प्रक्रिया संपन्न होती है।

लुट् लकार :

एधिता, एधितारौ, एधितारः।

एधितासे, एधितासाथे, एधिताध्वे।

एधिताहे, एधितास्वहे, एधितास्महे।

17.4 एध् धातु की लृट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

एध् धातु की लृट् लकार प्रक्रिया में वैसे तो कोई भी नया सूत्र कार्यविशेष के लिए नहीं लगता। लृट् लकार प्रक्रिया में सभी सूत्र भू धातु की लृट् प्रक्रिया के ही समान हैं, आत्मनेपद होने से केवल "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से तादि नव आत्मनेपद प्रत्ययों के टिभाग को एत्व करना है। अतः आपके पुनः स्मरणार्थ लृट् लकार के कतिपय धातुरूपों की प्रक्रिया का आपको अध्ययन कराया जा रहा है। साथ ही पूर्व में व्याख्यात सूत्रों की पुनः स्मरणार्थ व्याख्या भी की जा रही है।

सूत्र – टित आत्मनेपदानां टेरे 3/4/79

सूत्रवृत्तिः – टितो लस्यात्मनेपदानां टेरेत्वम्।

सूत्रानुवाद – टित् लकार के स्थान पर आदेश होने वाले आत्मनेपद प्रत्ययों के टि भाग को एकारादेश हो।

व्याख्या – टितः, आत्मनेपदानाम्, टेः, ए यह पदच्छेद है। इस तरह यह चतुष्पदात्मक सूत्र है। टितः यह पद षष्ठी एकवचनान्त है। आत्मनेपदानाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त है। टेः यह भी षष्ठी एकवचनान्त है तथा ए यह पद लुप्तप्रथमान्त है। टितः में स्थान षष्ठी है और टित् लकार अर्थात् लट्–लिट्–लुट्–लृट्–लोट् लकार जिनमें टकार इत्संज्ञक है उन टित् लकारों के स्थान पर आत्मनेपदानाम् अर्थात् आत्मने पद होने पर जो त–आताम्–झ इत्यादि नव तङादेश होते है अनके टि भाग यानि "अचोऽन्त्यादि टि" सूत्र से निर्दिष्ट अथवा संज्ञित अन्त्य अच् सहित अग्रिम सम्पूर्ण भाग जो टि है उसके स्थान पर एकारादेश होता है। जैसे त–प्रत्यय में अन्तिम अकार मात्र टिसंज्ञक है। आताम्–प्रत्यय में 'आम्' टि भाग है। इस प्रकार इनके टि भाग को सम्पूर्ण को एकारादेश दोता है। यह सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ। प्रक्रियाबोध के समय इसकी स्पष्टतर प्रतीति होगी।

यहाँ शङ्का होती है कि लट् के स्थान पर होने वाले क्या सभी आत्मनेपद आदेशों के स्थान पर एत्व होता है ? यदि ऐसा कहते हैं तो "लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे" इस सूत्र से लट् के स्थान पर होने वाले शानच् जिसकि इत्संज्ञा के बाद शेष बचे आन की "तङानावात्मेपदम्" सूत्र से आत्मनेपदसंज्ञा होने के कारण आन के टि के स्थान पर भी एत्व होना चाहिए। तो पचमानः, वर्धमानः, यजमानः इत्यादि में आन के टिरूप अन्तिम अकार को भी एत्व प्रसक्त होने लगेगा।

तो इस शङ्का का समाधान इस प्रकार है कि इस सूत्र में "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र की अनुवृत्ति आती है जिससे सूत्र का अर्थ होता है कि तिप्तसादि में जो त–आताम्–इत्यादि नव आत्मनेपदसंज्ञक प्रत्यय है उनके टि भाग को ही एत्वादेश होता है। इस तरह शानच् के आन का ग्रहण तिबादिप्रत्ययोः में न होने के कारण उसके टि भाग के स्थान पर एत्वादेश प्रसक्त नहीं होगा।

सूत्र – आतो ङितः 7/.2/81

सूत्रवृत्तिः – अतः परस्य ङितामाकारस्य इय स्यात्।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश हो।

व्याख्या – आतः ङितः यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में "अतो येयः" इस सूत्र से अतः और इय् की अनुवृत्ति होती है। "अङ्गस्य" इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य यह पद 'अतः' इस विशेषणीभूत पञ्चम्यन्त का विशेष्य होता है, जिससे अङ्गस्य में श्रूयमाण षष्ठी पञ्चम्यन्त में परिवर्तित होकर अङ्गात् ऐसा बोध कराती है। अतः और अङ्गात् में परस्पर विशेषण–विशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है, फलतः अदन्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त होगा। 'अतः' पद में जो पञ्चमी है वह

दिग्योग पञ्चमी है इस कारण परस्य पद का अध्याहार होगा। अदन्तात् अङ्गात् परस्य अर्थात् 'अदन्त अङ्ग से पर' इतना अर्थ फलित होगा। इस सूत्र में 'ङितः' जो पद में जो षष्ठी है वो अवयव षष्ठी है अतः ङित् प्रत्यय के अवयव जो आकार है उसको इय् ऐसा आदेश होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ इस प्रकार होगा – अदन्त अङ्ग से पर में जो ङित प्रत्यय है उसके आकार को इय् आदेश होता है।

सूत्र – थासः से 3/4/80

सूत्रवृत्तिः – टितो लस्य थासः से स्यात्।

सूत्रानुवाद – टित् लकार के स्थान पर हुए थास को 'से' आदेश हो।

व्याख्या – थासः, से यह पदच्छेद है। इस सूत्र में "लस्य" इस सूत्र का अधिकार है। 'थासः' स्थान षष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। थास के स्थान पर ऐसा अर्थ लगेगा। 'से' यह लुप्तप्रथमान्त पद है जो कि आदेशपरक है। से आदेश अनेकाल् होने के कारण "अनेकाल्शित् सर्वस्य" इस परिभाषा सूत्र के सहायता से सम्पूर्ण थास् के स्थान पर होगा। तो इस प्रकार टित् लकार के स्थान पर जो आदेश थास् हुआ उस थास् के सम्पूर्ण के स्थान पर से आदेश होता है ऐसा सूत्र का पूर्ण अर्थ हुआ।

सूत्र – अतो दीर्घो यञि 7/3/101

सूत्रवृत्तिः – अतोऽङ्गस्य दीर्घो यञादौ सार्वधातुके।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग के स्थान पर दीर्घ आदेश हो, यञादि सार्वधातुक के पर में।

व्याख्या – अतः, दीर्घः यञि यह पद विभाग है। अतः षष्ठी को एकवचन है। अतः में तपरकरण किया गया है, जिससे ह्रस्व अकार मात्र का ग्रहण होता है। 'अङ्गस्य' इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य इन दोनों पदों में विशेषण विशेष्य भाव है। अङ्गस्य यह विशेष्य है और अतः उसका विशेषण। विशेषणविशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है। तथा षष्ठी निर्देश होने से 'अलोऽन्त्यस्य' इस परिभाषा से अङ्गान्त ह्रस्व अकार (अङ्ग के अन्त में विद्यमान अकार) के स्थान पर यह अर्थ प्राप्त होता है। 'दीर्घः' पद प्रथमान्त आदेश परक है। यञि पद सप्तमी एकवचनान्त है। "तुरस्तुशम्यमः सार्वधातुके" से सार्वधातुके पद की अनुवृत्ति होती है; जो कि विशेष्य परक है और यञि उसका विशेषण है। तदनुसार सप्तम्यन्त निर्देश होने से विशेषणविशेष्य भाव होने पर भी तदन्तविधि न करके, उसके अपवादभूत तदादिविधि को किया जाता है। तो यञादि सार्वधातुक प्रत्यय के पर में होने से ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होता है कि अङ्ग के अन्त में विद्यमान ह्रस्व अकार के स्थान पर यञादि सार्वधातुक प्रत्यय पर में होने पर दीर्घ आदेश होता है। जो कि ह्रस्व अकार के स्थान पर आकार रूप आदेश होता है। यह सूत्र भवामि के समान एधिष्यावहे इत्यादि स्थलों पर दीर्घ आदेश करता है।

एधिष्यते – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक त प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+त इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+त इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् स्य का आद्यवयव होगा) एध् इ+स्य +त इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" से त के टि अकार को एत्व करने पर एध् इ+स्य +ते इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यते रूप सिद्ध हो जाता है।

एधिष्येते – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक आताम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+आताम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य +आताम् इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध् इ+स्य+इय् ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और आद्गुणः से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ताम् के आम् को एत्व होने पर एध् इ+स्ये+ते इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्येते रूप सिद्ध हो जाता है।

एधिष्यावहे – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक वहि प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+वहि इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य +वहि इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+वहि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्र से यकार पर अकार का दीर्घ होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से वहि के इ को एत्व होने पर एध् इ+स्या+वहे इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यावहे रूप सिद्ध होगा।

17.5 एध् धातु की लृट् लकार प्रक्रिया

एधिष्यन्ते – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक झ प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+आताम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य्+झ इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" सूत्र से झ को अन्तादेश करने पर एध् इ+स्य+अन्त इस अवस्था में "अतो गुणे" सूत्र से स्य के अकार व अन्त के आदि अकार दोनों के स्थान पर पररूप एकादेश होने पर एध् इ+स्यन्त इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से अन्त (झ) के टि भाग को एत्व होने पर एध् इ+स्यन्ते इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यन्ते रूप सिद्ध हो जाता है ।

एधिष्यसे – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक थास् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+थास् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+थास् इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+थास् इस अवस्था में "थासः से" सूत्र से थास् के स्थान पर से आदेश करने पर एध् इ+स्य+से इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यसे रूप सिद्ध हो जाता है।

विशेष – थास् को एकारान्त 'से' आदेश करने से ज्ञापित होता है कि टित् लकार में तङ् प्रत्ययों के स्थान पर हुए आदेशों को "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से एत्व नहीं होता। यह हम विशेष ध्यातव्य बिन्दु में पाठ के आरम्भ में आपको इसके बारे में बता चुके है।

एधिष्येथे – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक आथाम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध+्आथाम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+आथाम् इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+आथाम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आथाम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध्+इ+स्य+इय् थाम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और आद्गुणः से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से थाम् के आम् को एत्व होने पर एध् इ+स्ये+थे इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र

से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्येथे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधिष्यध्वे – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से मध्यमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक ध्वम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+ध्वम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+ध्वम ्इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+ध्वम ्इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ध्वम् के अम् को एत्व होने पर एध् इ+स्य+ध्वे इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यध्वे रूप सिद्ध हो जाता है।

एधिष्ये – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक इट् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+इ इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+इ इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+इ इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से इ–मात्र को व्यपदेशिवद्भाव से टिभाग मानकर एत्व होने पर एध् इ+स्य+ए इस अवस्था में अकार–एकार को "वृद्धिरेचि" सूत्र से प्राप्त वृद्धि को बाधकर 'अतो गुणे' सूत्र से पर रूप करने पर एध् इ+स्ये इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्ये रूप सिद्ध हो जाता है।

एधिष्यामहे – एध् धातु से "लृट् शेषे च" इस सूत्र से लृट् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक महिङ् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+महि इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य+महि इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य+महि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्र से यकारपर अकार का दीर्घ होने से स्य के अकार को दीर्घ रूप आदेश आकार होने पर तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से महि के इ को एत्व होने पर एध् इ+स्या+महे इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्य प्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर एधिष्यामहे रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार एध् धातु की लृट् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ उपरोक्त चर्चा के अनुसार संपन्न है।

लृट् लकार :

एधिष्यते, एधिष्येते, एधिष्यन्ते।

एधिष्यसे, एधिष्येथे, एधिष्यध्वे।

एधिष्ये, एधिष्यावहे, एधिष्यामहे ।

17.6 सारांश

इस पाठ में आपने एध् धातु के लुट् लकार व लृट् लकार की प्रक्रिया के बारे में अध्ययन किया। मुख्यतः देखा जाए तो इस पाठ में आपने प्रक्रिया आधिगम पर अधिक अवधान किया। क्योंकि लुट् लकार प्रक्रिया में केवल दो ही विशेष सूत्र हैं। जिनका आपने विस्तृत व्याख्या सहित उनके द्वारा किए जाने ले विधान का परिचय प्राप्त किया। ये दोनों सूत्र हैं – धि च और ह एति। "धि च" सूत्र का विशेष कार्य मध्यम पुरुषके बहुवचन में ध्वम् प्रत्यय के प्रसङ्ग में होता है। वहाँ यह सूत्र धकारादि प्रत्यय के पर में रहने पर तास् के सकार के लोप का विधान करता है। जिससे एधिताध्वे रूप की सिद्धि होती है। "ह एति" जो कि लुट् प्रक्रिया में आया दूसरा सूत्र है, यह सूत्र तास् और अस् धातु के सकार को हकारादेश करता है एकार के पर में रहने पर। एध् धातु के प्रसङ्ग में इस सूत्र के द्वारा उत्तमपुरुष एकवचन में जब इ(ट्) प्रत्यय को एत्व होने पर परत्वेन एकार की स्थिति होने पर तास् के सकार को हकार करने से एधिताहे रूप निष्पन्न होता है। इस प्रकार दो विशेष सूत्रों का अध्ययन कर आपने लृट्–लकार प्रक्रिया का अध्ययन किया। इस प्रक्रिया में कोई नया विशेष सूत्र नहीं प्रवृत्त होने के कारण आपको केवल प्रक्रिया मात्र का अध्ययन कराया गया। इससे आपके पूर्वार्जित ज्ञान का पुनः बोध कराया गया।

17.7 शब्दावली

डित्त्वसामर्थ्यात् अभस्यापि टेर्लोपः – डित्करण के सामर्थ्य से अभस्य = जिसकी भ संज्ञा न हो उसके भी टिभाग का लोप होता है। यह एक प्रकार का नियम है। वस्तुतः "यचि भम्" इस सूत्र के द्वारा जब पूर्व भाग की भसंज्ञा होती है तभी भसंज्ञक भाग के टिभाग का लोप किया जाता है। परन्तु जहाँ कहीँ पर जोकि भाधिकार (भ संज्ञा के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता) में नहीं आता उसके भी टिभाग का लोप करना हो तो वहाँ प्रत्ययादि को डित् अर्थात् डकार इत्संज्ञक वर्ण से पाणिनि युक्त कर देते हैं, उससे डकार की इत्संज्ञा होने के बाद डित्करणसामर्थ्य से पूर्व भाग के भसंज्ञक नहीं होने पर भी उसके टि भाग का लोप कर देते हैं जैसा कि भसंज्ञा होने पर होता है। अतएव कहा जाता है डित्त्वसामर्थ्यात् अभस्यापि टेर्लोपः इति।

यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे – यह एक परिभाषा है जो तदन्तविधि का अपवाद है। जैसा कि आपको पता है कि तदन्तविधि "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से की जाती है। जिस विशेषण से

विधि की जाती है, वह विशेषण है अन्त में जिसके, वह उसका बोध कराता है तथा अपने स्वरूप का भी बोध कराता है। जैसे – "एरच्" सूत्र में "धातोः" सूत्र का अधिकार है । यहाँ धातोः विशेष्य है और इकार उसका विशेषण है तो तदन्त का बोध कराकर एरच् सूत्र का अर्थ होता है कि इवर्णान्त धातु से (जि जये, चिञ् चयने इत्यादि से) अच् प्रत्यय होता है। अपने ही स्वरूप का बोध कराने से इवर्ण मात्र रूप इण्–गतौ धातु से भी अच् सिद्ध होता है। यह तो अर्थ है तदन्तविधि का। अब इसकी अपवादभूत परिभाषा यस्मिन्विधिस्दादावल्ग्रहणे का परिचय करते हैं।

जहाँ विशेषण सप्तम्यन्त और वर्णमात्र हो वहाँ तदादिविधि कही जाती है। जैसे वान्तो यि प्रत्यये में यि पद य् का सप्तम्यन्त और प्रत्यये का विशेषण है तो वहाँ तदादि विधि होकर यादौ (यकारादि) प्रत्यये परे ऐसा अर्थ करते है। ठीक उसी प्रकार धि च सूत्र में भी धि पद ध्–वर्णमात्र का सप्तम्यन्त और प्रत्यये का विशेषण होकर धकारादि प्रत्यये परे ऐसा अर्थ बोध कराता है।

इट् – यह एक आगम है। इसके आगम होने में टित् (टकारानुबन्ध) ही प्रमाण है। लुट् व लृट् लकार प्रक्रिया में "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से यह आगम होता है। "आद्यन्तौ टकितौ" सूत्र से यह टित् होने से आद्यवयव होने के कारण जिस किसी का आगम होता है उसके पूर्व में होता है। जैसे दृ तास्/स्य प्रत्ययों के पूर्व में प्रक्रिया के दौरान हमने आपको बताया।

लोप – अदर्शनं लोपः सूत्र से लोप संज्ञा होती है। जब किसी प्रसक्त या दृश्यमान वर्ण या पद का अदर्शन हो तो उसकी लोपसंज्ञा होती है।

17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य भीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहित।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहित।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वय सहित।

17.9 अभ्यास प्रश्न

1. "ह एति" सूत्र में तासस्त्योः पद में अस्ति निर्देश कैसा निर्देश है तथा किस धातु को इंगित करता है?
2. "ह एति" सूत्र में आए तासस्त्योः पदघटित अस् धातु से सम्बन्धित उदाहरण क्या है ?

3. 'एधिता' की सिद्धि प्रक्रिया समझाइये।

4. "धि च" सूत्र की व्याख्या कीजिए।

5. 'एधिष्यामहे' की सिद्धि प्रक्रिया सूत्रोल्लेख पूर्वक बताइये।

6. 'एधितारौ' की सिद्धि प्रक्रिया का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

इकाई 18 एध् धातु (आत्मनेपद) आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- एध् (वृद्धौ) धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढ़ेंगे।
- आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।
- आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ हों पाएँगे।
- सूत्रों के व्याख्यान करने की विधा में नैपुण्य प्राप्त करेंगे; तथा

- एध् धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातु रूपों को प्रक्रिया के माध्यम से जानकर उनका प्रयोग करने में समर्थ हो पाएंगे।

18.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई में आपने एध् धातु की लुट् व लृट् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या का विस्तार से अध्ययन किया था। साथ ही सूत्रों के उदाहरण स्वरूप प्रक्रिया के क्रम का भी अभ्यास आपने किया। इस पाठ में आप एध् धातु की आशीर्लिङ् एवं लोट् लकार की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया में आने वाले विशेष सूत्रों का व्याख्यान सहित विस्तार से अध्ययन करेंगें। प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों में यदि कोई विशेष अंश भी ध्यातव्य है तो उसका भी सप्रसङ्ग विवेचन इस पाठ में किया जाएगा। जैसे पूर्व पाठ में तदन्तविधि की अपवादभूत परिभाषा 'यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे' का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया गया था। इस इकाई में आप एध् धातु के आशीर्लिङ् एवं लोट लकार की प्रक्रिया, रूपों तथा तन्मध्य प्रयुक्त सूत्रों पर विस्तार से अध्ययन करेंगे।

18.2 एध् धातु की आशीर्लिङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – लिङः सीयुट् 3/4/102

सूत्रवृत्तिः – लिङः सीयुट् स्यात्।

सूत्रानुवाद – लिङ् को सीयुट् आगम हो।

व्याख्या – लिङः, सीयुट् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। लिङः यह षष्ठ्यन्त पद है। अवयव षष्ठी है जिससे 'लिङ् का' ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। सीयुट् यह प्रथमान्त है। टित् होने से आद्यवयव होता है। अतः सूत्र का सम्पूर्णार्थ होगा – लिङ् को सीयुट् आगम होता है। लिङ् से यहाँ विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ् दोनों अभिप्रेत हैं।

सूत्र – सुट् तिथोः 3/4/107

सूत्रवृत्तिः – लिङस्तथोःसुट्।

सूत्रानुवाद – लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम हो।

व्याख्या – सुट्, तिथोः यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। सुट् प्रथमान्त है जो कि टित् होने से आद्यवयव के रूप में प्रसक्त होता है। तिथोः पद में तिश्च थ् च तिथौ, तयोः तिथोः इस प्रकार से विग्रह होने पर षष्ठी द्विवचनान्त है। अवयव षष्ठी होने से तकार व थकार को सुट् आगम होता है ऐसा अर्थ सम्पन्न होगा। तिथोः में ति का इकार उच्चारणार्थ है। किसके तकार व थकार को सुट् होता है इस आकाङ्क्षा का शमन करने हेतु "लिङः सीयुट्" सूत्र से

लिङः की अनुवृत्ति करते हैं तो सूत्र का अर्थ पूर्ण हो जाता है कि – लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम होता है ।

ध्यातव्य –सीयुट् तथा सुट् दोनों आगमों में परस्पर कोई बाध्यबाधकभाव नहीं है। क्योंकि दोनों की प्रवृत्ति का विषय भिन्न है। यद्यपि लिङ् लकार में दोनों की प्रवृत्ति है तथापि सीयुट् आगम लिङ् को होता है, जबकि सुट् लिङ् के तकार व थकार को। जैसे – त प्रत्यय को सुट् होगा तो वह स्त बन जाएगा। आताम् के पूर्व में होगा तो आस्ताम् बन जाएगा। थास् में स्थास् इत्यादि। यह प्रक्रिया में अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण – एधिषीष्ट – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध् त इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्त इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के तकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय+स् त इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय+स् त इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+स्+त इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से दोनों सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+ष् त ऐसी स्थिति में तकार को षकार के योग के कारण "ष्टुना ष्टुः" सूत्र से ष्टुत्व करने से एधिषीष्ट रूप सिद्ध होगा ।

सूत्र – झस्य रन् 3/4/105

सूत्रवृत्तिः – लिङो झस्य रन् स्यात्।

सूत्रानुवाद – लिङ् के झकार के स्थान पर रन् आदेश हो।

व्याख्या – झस्य, रन् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। झस्य यह स्थान षष्ठ्यन्त एकवचन है। रन् पद प्रथमान्त आदेशपरक है। स्थान षष्ठी होने से झकार के स्थान पर, रन् आदेश होता है, इत्यादि अर्थ प्राप्त होता है। "लिङः सीयुट्" सूत्र से लिङः पद की षष्ठ्यन्त की अनुवृत्ति की जाती है। स्थान षष्ठी होने से लिङ् के स्थान पर यह अर्थ करके सम्पूर्ण सूत्रार्थ लब्ध होता है कि – लिङ् के झकार को रन् आदेश होता है ।

उदाहरण – एधिषीरन् – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्+झ इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+साय्+झ इस अवस्था में "झस्य रन्"

इस सूत्र से झकार को रन् – आदेश करने पर एध्+सीय्+रन् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+रन् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध्+इ+सी+रन् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध्+इषी+रन् ऐसा मिलाने पर एधिषीरन् रूप सम्पन्न होता है।

सूत्र – इटोऽत् 3/4/106

सूत्रवृत्तिः – लिङादेशस्य इटोऽत् स्यात्।

सूत्रानुवाद – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश हो।

व्याख्या – इटः, अत् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "लिङः सीयुट्" से लिङः पद की अनुवृत्ति होती है। इटः यह स्थानषष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। इट् के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। अत् यह आदेश परक है। यहाँ आदेश अकारमात्र ही है। तकार केवल मुख सुखार्थ उच्चारणार्थ है, न कि तपरकरण। तपरकरण करने पर दीर्घादि की व्यावृत्ति होती है, केवल तत्कालसदृश उच्चारणकाल का ही ग्रहण हो इसलिए तपरकरण किया जाता है। परन्तु प्रकृत स्थल में ऐसा नहीं है क्योकि अकार के विधीयमान होने से वह दीर्घादिसवर्णों का ग्राहक नहीं होता, अतः व्यावर्त्य के अभाव में तपरकरण मानने की भ्रान्ति न हो एसलिए विस्तार से बताया गया है। अनुवर्तमान लिङः पद भी षष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। स्थान षष्ठी होने से यह भी लिङ्के स्थान पर ऐसा बोध कराता है। तो इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ होता है कि – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश होता है।

उदाहरण – एधिषीय – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय करने पर एध्+इ इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+इ इस अवस्था में "इटोऽत्" इस सूत्र से इकार को अ–आदेश करने पर एध् सीय्+अ इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+अइस् अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+सीय्+अ ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है।

18.3 एध् धातु की आशीर्लिङ् प्रक्रिया

एधिषीयास्ताम् – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध् + लिङ् इस स्थिति मेंउसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस

सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+आ, स्+ताम् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के तकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+आ स् – ताम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+आ+स्–ताम् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सीय् के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षीय्+आ, स्–ताम् ऐसी स्थिति में वर्णसम्मेलन से एधिषीयास्ताम् रूप सिद्ध होगा।

एधिषीष्ठाः – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध्+थास् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादि प्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+थास् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के थकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+स्–थास् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+स्–थास् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+स्–थास् इस अवस्था में "आदेश प्रत्यययोः" सूत्र से दोनों सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+ष्–थास् ऐसी स्थिति में "ष्टुना ष्टुः" सूत्र से थकार को ष्टुत्व ठकार और अंतिम स को रुत्व विसर्ग करने पर वर्णसम्मेलन से एधिषीष्ठाः रूप सिद्ध होगा।

एधिषीयास्थाम् – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+आथाम् इस अवस्था में "सुट् तिथोः" सूत्र से लिङ् के थकार को सुट् आगम होने तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+सीय्+आ स्–थाम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+आ स्–ताम् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सीय् के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षीय्+आ स्–ताम् ऐसी स्थिति में वर्णसम्मेलन से एधिषीयास्थाम् रूप सिद्ध होगा।

एधिषीध्वम् – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+ लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से

सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+ध्वम् इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+ध्वम् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (धकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+ध्वम् इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सी (सीयुट्) के सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ्षी+ध्वम् ऐसी स्थिति में वर्ण सम्मेलन से एधिषीध्वम् रूप सिद्ध होगा।

एधिषीवहि – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्+ लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध्. वहि इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+वहि इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+वहि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (वकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+वहि इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+वहि ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है ।

एधिषीमहि – एध् धातु से "आशिषि लिङ्लोटौ" सूत्र से आशीर्लिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महिङ् प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर एध+महि इस स्थिति में "लिङाशिषि" इस सूत्र से आशीर्लिङ् लकार में तादिप्रत्ययों की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+सीय्+महि इस अवस्था में सीय् (सीयुट्) की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा होने से "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम अनुबन्ध लोप होने पर एध् इ+सीय्+महि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से सीय् के यकार का वल् (मकार) के पर में होने के कारण यकार का लोप होने पर एध् इ+सी+महि इस स्थिति में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से सकार को मूर्धन्य षत्वादेश करने पर एध् इ+षी+महि ऐसा मिलाने पर एधिषीय रूप सम्पन्न होता है।

आशीर्लिङ् लकार –

एधिषीष्ट, एधिषीयास्ताम्, एधिषीरन्।

एधिषीष्ठाः, एधिषीयास्थाम्, एधिषीध्वम्।

एधिषीय, एधिषीवहि, एधिषीमहि।

18.4 एध धातु की लोट् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – आमेतः 3/4/90

सूत्रवृत्तिः – लोट एकारस्य आम् स्यात्। एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्।

सूत्रानुवाद – लोट् के एकार के स्थान पर आम् आदेश हो।

व्याख्या – आम्, एतः यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। आम् पद प्रथमा एकवचनान्त है। एतः पद षष्ठी एकवचनान्त है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः यह स्थान षष्ठ्यन्त पद अनुवृत्त होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होता है कि – लोट् के एकार के स्थान पर आम् आदेश हो। यहाँ आम् में मकार यद्यपि उपदेशावस्था में हल्वर्ण है अतः "हलन्त्यम्" से इसकी इत्संज्ञा प्राप्त होती है। परन्तु "हलन्त्यम्" के अपवाद सूत्र "न विभक्तौ तुस्माः" सूत्र से मकार की इत्संज्ञा का निषेध हो जाता है। इत्संज्ञा नहीं होने से लोप भी नहीं होता। क्योकि इत्संज्ञा होने पर ही लोप होता है।

उदाहरण – एधताम् – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध्+त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+ते इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से त प्रत्यय के टि भाग अ को एत्व करने पर एध् अ+त इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश करने पर एधताम् रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – सवाभ्यां वाऽमौ 3/4/91

सूत्रवृत्तिः – सवाभ्यां परस्य लोडेतः क्रमाद् वाऽमौ स्तः।

एधस्व, एधेथाम्, एधध्वम्।

सूत्रानुवाद – स् और व् से परे लोट् के एकार को क्रमशः 'व' और 'अम्' आदेश हो जाते हैं।

व्याख्या – सवाभ्याम्, वाऽमौ यह पदविभाग है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से 'लोटः' इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। "आमेतः" सूत्र से 'एतः' की अनुवृत्ति होती है। यह भी षष्ठ्यन्त पद है। लोटः में अवयव षष्ठी है और एतः में स्थान षष्ठी, तो इस प्रकार एकार का लोट् के साथ अन्वय करने पर अर्थ होगा – लोट् के अवयव एकार के स्थान पर। सश्च वश्च सवौ, ताभ्यां सवाभ्याम्, यह इतरेतरद्वन्द्वसमास, पञ्चमीद्विवचनान्त है। दिग्योग पञ्चमी होने से 'परस्य' पद का लाभ होता है। सकार और वकार से परे ऐसा अर्थ हो जाता है। वश्च अम् च वाऽमौ यह इतरेतरद्वन्द्व समासघटित पद है, जो कि आदेशपरक है। निमित्त और आदेशों के समानसंख्यक होने से 'यथासंख्यन्याय' से सकार से पर विद्यमान एकार को व, वकार से पर विद्यमान एकार को अम् आदेश हो, तो इस तरह सूत्र का फलितार्थ होता है

– सकार और वकार से परे लोट् के एकार को क्रमशः 'व' और 'अम्' आदेश होते हैं। यह सूत्र 'आमेतः' का अपवाद है।

उदाहरण – एधस्व – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध्. थास् इस स्थिति में थास् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+थास् इस अवस्था में "थासः से" इस सूत्र से थास् प्रत्यय के स्थान पर से आदेश करने पर एध्+अ+से इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "सवाभ्यां वाऽमौ" इस सूत्र से सकार परत्र विद्यमान लोट् के एकार को व–आदेश करने पर एधस्व रूप सिद्ध होता है।

सूत्र –एत ऐ 3/4/93

सूत्रवृत्तिः – लोडुत्तमस्य एत ऐ स्यात्। एधै, एधावहै, एधामहै।

सूत्रानुवाद – लोट् के उत्तमपुरुष के एकार को ऐकार आदेश हो।

व्याख्या – एतः, ऐ यह पदविभाग है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः तथा "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तमस्य पद की अनुवृत्ति होती है। दोनों पद षष्ठ्यन्त हैं। 'लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष के' यह अर्थ होगा। एतः पद भी स्थानषष्ठ्यन्त है और ऐ पद आदेशपरक प्रथमान्त है, तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित हुआ कि लोट् सम्बन्धी उत्तमपुरुष के एकार को ऐ–आदेश हो। यह सूत्र भी पूर्व सूत्र की तरह "आमेतः" सूत्र का अपवाद है।

विशेष– इस प्रक्रिया में आए "आडुत्तमस्य पिच्च" तथा "आटश्च" सूत्र के बारे में आप भू धातु के लोट् उत्तमपुरुष प्रक्रिया में अध्ययन कर चुके हैं, तथापि इनकी संक्षेप में व्याख्या आपके सौकर्य के लिए प्रस्तुत की जा रही है।

सूत्र – आटश्च 6/1/90

सूत्रवृत्तिः – आटोऽचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्।

सूत्रानुवाद – आट् से अच् परे रहते पूर्व+पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

व्याख्या – आटः, च यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "एकः पूर्वपरयोः" का अधिकार इस सूत्र में आता है। "वृद्धिरेचि" सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति आती है। "इको यणचि" सूत्र से अचि अनुवृत्त होता है। आटः यह पञ्चम्यन्त पद है। आट् से पर में ऐसा अर्थ होता है। अचि पद के सप्तम्यन्त होने से तस्मिन् परे ऐसा अर्थ होगा। "एकः पूर्वपरयोः" में षष्ठी द्विवचन है, इस अधिकार सूत्र की उपस्थिति से पूर्व और पर के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। तदनुसार आट् से पर में अचि परे पूर्व पर दोनों के स्थान एकादेश होता है यह निष्कृष्ट अर्थ है और

वह एकादेश "वृद्धिरेचि" सूत्र से अनुवृत्त वृद्धि पद के कारण वृद्धिरूप होता है यह सूत्रार्थ फलित हुआ।

सूत्र – आडुत्तमस्य पिच्च 3/4/92

सूत्रवृत्तिः – लोडुत्तमस्य आट् स्यात् पिच्च।

सूत्रानुवाद – लोट् के उत्तम पुरुष को आट् का आगम हो औप उत्तम पुरुष पित् माना जाए।

व्याख्या – आट्, उत्तमस्य, पित्, च– यह पदविभाग है। यह चतुष्पद सूत्र है। आट् पद प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त है। उत्तमस्य यह षष्ठी एकवचनान्त है, यह अवयव षष्ठी है। पित् पद प्रथमा एकवचनान्त है। च अव्ययपद है। "लोटो लङ्वत्" सूत्र से लोटः यह षष्ठी एकवचनान्त पद अनुवृत्त होता है। सम्बन्ध सामान्य अर्थ में षष्ठी है। लोटः पद का अन्वय उत्तमस्य पद के साथ होता है। तदनुसार इसका अर्थ होता है लोट् से सम्बन्धित उत्तमपुरुष को (उत्तमपुरुष के अवयव रूप में)। आट् जो कि टित् होने के कारण आगम स्वरूप है वह लोट् सम्बन्धित उत्तम पुरुष के तीनों प्रत्यय इट्, वहि और महिङ् के अवयव के रूप में विहित होता है। यहाँ प्रकृत सूत्र के द्वारा उत्तम पुरुष को पित् का अतिदेश किया जाता है। अर्थात् पित्व धर्म का आरोप किया जाता है। तो इस प्रकार सूत्रार्थ फलित हुआ कि – लोट् के उत्तम पुरुष को आट् आगम होता है और उत्तम पुरुष पित् माना जाता है।

ध्यात्वय – पित् करने का प्रयोजन यह है कि "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने पर उसको ङिद्वत् कर दिया जाता है। अर्थात् ङित्व धर्म का आरोप उस प्रत्यय में होता है। तो इट्, वहि और महिङ् प्रत्यय भी अपित् सार्वधातुक प्रत्यय हैं तो यहाँ ङित्व का अतिदेश ना हो इसलिए पित्व का विधान किया गया है।

उदाहरण – एधै – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय करने पर एध्.इट् इस स्थिति में इट् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+इ इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से इ प्रत्यय के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+ए इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध्+ऐ इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध्+आ+ऐ ऐसी स्थिति में "आटश्च" सूत्र से आकार व ऐकार के स्थान पर ऐकार वृद्धि होने पर एध्+ऐ इस अवस्था में पुनः "वृद्धिरेचि" सूत्र से अकार तथा एकार के स्थान पर वृद्ध्येकादेश होने पर एधै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

18.5 एध् धातु की लोट् प्रक्रिया

एधेताम् – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में आताम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध् अ+इय्+ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से ताम् के आम् को एत्व होने पर एधेते इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एधेताम् रूप सिद्ध होता है।

एधन्ताम् – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्.झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्अ+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" सूत्र से झ को अन्तादेश होने पर एध+अ+अन्त इस स्थिति में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से अन्त के टि भाग अन्तिम अकार को एत्व होने पर एध्+अ+अन्ते इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एध्+अ+अन्ताम् इस स्थिति में "अतो गुणे" सूत्र से दोनों अकार के स्थान पर पररूप एकादेश होने पर एधन्ताम् रूप सिद्ध होता है।

एधेथाम् – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्. आथाम् इस स्थिति में आथाम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आथाम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आथाम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध् अ+इय्+थाम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने तथा "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से थाम् के आम् को एत्व होने पर एधेथे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से अन्तिम एकार के स्थान पर आम् आदेश होने पर एधेथाम् रूप सिद्ध होता है।

एधध्वम् – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में ध्वम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा

शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्अ+ध्वम् इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से ध्वम् के टि भाग को एत्व आदेश करने पर एध्+अ+ध्वे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "सवाभ्यां वाऽमौ" इस सूत्र से वकार परत्र विद्यमान लोट् के एकार को अम्–आदेश करने पर एधध्वम् रूप सिद्ध होता है।

एधावहै – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्+लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध्+वहि इस स्थिति में वहि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+वहि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से वहि प्रत्यय के टिभाग के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+वहे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध्+वहै इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध+आ+वहै ऐसी स्थिति में "अकः सवर्णे दीर्घः" सूत्र से अकार–आकार के स्थान पर आकार सवर्णदीर्घ होने पर एधावहै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

एधामहै – एध् धातु से "लोट् च" सूत्र से लोट् लकार करने पर एध्. लोट् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महिङ् प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर एध्+महि इस स्थिति में महि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+महि इस अवस्था में "टित आत्मनेपदानां टेरे" इस सूत्र से महि प्रत्यय के टिभाग के स्थान पर ए–आदेश करने पर एध्+अ+महे इस अवस्था में "आमेतः" सूत्र से एकार को आम् आदेश प्राप्त होने पर उसको बाधकर "एत ऐ" इस सूत्र से लोट् के एकार को ऐ–आदेश करने पर एध+महै इस अवस्था में "आडुत्तमस्य पिच्च" सूत्र से उत्तम पुरुष के प्रत्यय को आडागम–अनुबन्ध लोप करने पर एध+आ+महै ऐसी स्थिति में "अकः सवर्णे दीर्घः" सूत्र से अकार–आकार के स्थान पर आकार सवर्णदीर्घ होने पर एधामहै यह अभीष्ट रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार यह एध् धातु की आशीर्लिङ् एवं लोट् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ समाप्त होता है।

लोट् लकार –

एधताम्, एधेताम्, एधन्ताम्।

एधस्व, एधेथाम्, एधध्वम्।

एधै, एधावहै, एधामहै।

18.6 सारांश

इस पाठ में आपने एध् धातु के आशीर्लिङ् व लोट् लकार की प्रक्रिया व प्रक्रिया में आए सूत्रों के सम्बन्ध में अध्ययन किया। पहले आपने आशिर्लिङ् लकार की प्रक्रिया के सम्बन्ध में पढ़ा जिसमें मुख्यतया चार सूत्रों की व्याख्या आपने अधिगत की। इसमें पहला सूत्र था "लिङः सीयुट्"। यह सूत्र लिङ् लकार को सीयुट् आगम करता है। टित् होने के कारण यह आद्यवयव के रूप में होता है। इस क्रम में दूसरा सूत्र था "सुट् तिथोः"। इस सूत्र से लिङ् के तकार व थकार को सुट् आगम होता है। यह भी टित् होने के कारण आद्यवयव होता है। सीयुट् व सुट् में परस्पर बाध्यबाधकभाव तो नहीं है क्योंकि सीयुट् लिङ् लकार के अवयव के रूप में प्रवृत्त होता है और सुट् तो लिङ् के स्थान पर आए प्रत्ययस्थ तकार व थकार के अवयव के रूप में होता है। इसका फलभेद प्रक्रिया के माध्यम से विस्तार से समझाया जा चुका है। फिर तीसरा सूत्र आया "झस्य रन्" इससे लिङ् के झप्रत्यय को रन् आदेश होता है, और आशीर्लिङ् प्रक्रिया का अन्तिम सूत्र था "इटोऽत्", इससे लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर अकार आदेश होता है।

आशीर्लिङ् प्रक्रिया के बाद आपने लोट् लकार प्रक्रिया में आए सूत्रों का विस्तार से अध्ययन किया। जहाँ पहले "आमेतः" सूत्र की व्याख्या से आपको ज्ञात हुआ कि लट् लकार की एधते रूप की प्रक्रिया पर्यन्त समानतया प्रक्रिया द्वारा एधते बनने पर "आमेतः" सूत्र से लोट् के एकार को आम् आदेश किया जाता है जिसके फलस्वरूप एधताम् रूप निष्पन्न होता है। उसके बाद "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र से आपको ज्ञात हुआ कि सकार व वकारसे पर जो लोट् का एकार है उसको क्रमशः व और अम् आदेश होते है। आमेतः सूत्र का यह अपवाद है। उदाहरण – एधस्व, एधध्वम्। ततः पश्चात् "एत ऐ" सूत्र जो कि उत्तम पुरुष में प्रवृत्त होता है उसके द्वारा लोट् के उत्तम पुरुष के एकार को ऐकार आदेश किया जाता है। यह भी केवल उत्तम पुरुष में प्रवृत्त होने के कारण विशेष विहित होने से 'आमेतः' सूत्र का अपवाद है। तदनुसार एधै, एधावहै, एधामहै रूप निष्पन्न होते हैं।

18.7 शब्दावली

आगम – टित्–कित्–मित् इत्यादि लिङ्गों से चिह्नित आगम होते हैं। जो किसी के अवयव के रूप में आते हैं। अवयव के रूप में विधीयमान ऐसा अर्थ समझना चाहिए। इसलिए मित्रवत् आगमः अर्थात उसे स्वीकार करना चाहिए ऐसा कहा जाता है। क्योंकि ये किसी को हटाकर उसके स्थान पर नहीं होते हैं। अपितु अवयव रूप में होते हैं। इसलिए अवयव षष्ठी का अर्थ अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध माना जाता है।

आदेश – आगम के विपरीत आदेश किसी के स्थान पर होते हैं। यह किसी वर्ण अथवा पद को हटाकर प्रवृत्त होते हैं। इसलिए शत्रुवत् आदेशः ऐसा कहा जाता है। आदेश निवर्तक

(हटाने वाला) होता है जो किसी स्थानी के स्थान पर उसको निवृत्त करके होता है। स्थानी निवर्त्य होता है जिसको कि आदेश के द्वारा निवृत्त कर दिया जाता है अर्थात् हटा दिया जाता है। इसलिए स्थान षष्ठी का अर्थ निवर्त्यनिवर्तकभाव सम्बन्ध माना जाता है।

अतिदेश – अतिदेश का अर्थ आरोप होता है। जब किसी धर्मी में किसी धर्म का आरोप किया जाता है तो वह अतिदेश कहलाता है। जैसा कि सार्वधातुकमपित् सूत्र से अपित् (जो पित् ना हो = जिसमें पकार कि इत्संज्ञा न हुई हो) सार्वधातुक प्रत्यय को ङित् की तरह मान लिया जाता है, उसमें ङित्व का अतिदेश या आरोप कर देते हैं। ङिद्वत् भाव होने से ङित् होने पर जो कार्य प्रसक्त होते हैं उनका विधान किया जाता है। गुणनिषेध, सम्प्रसारण इत्यादि ङित्वप्रयुक्त कार्य हैं।

अपवाद – "यत्कर्तृकावश्यप्राप्तौ यो विधिरारभ्यते स तस्यापवादः" इस नियम के अनुसार जब किसी विधिसूत्र की किसी स्थल पर अवश्यप्राप्ति हो तो भी किसी अन्य विधिसूत्र का आरम्भ करें तो वह अवश्य प्राप्त विधि का अपवाद होता है। जैसे – लोट् के एकार के स्थान पर "आमेतः" से आत्व की अवश्य प्राप्ति होने पर भी "सवाभ्यां वाऽमौ" यह सूत्र आरम्भ किया गया। क्योंकि लोट् लकार में एकार जहाँ–जहाँ मिलेगा वहाँ–वहाँ आमेतः की अवश्य प्राप्ति है। लेकिन जहाँ पर सकार और वकार से पर में लोट् का एकार मिलता है वहाँ भी अगर आकार होने लगे तो सवाभ्यां वाऽमौ सूत्र निरवकाश हो जाएगा अर्थात् कहीं प्रवृत्त नहीं हो पाएगा। अतः किसी विधि का निरवकाश होना ही अपवाद बनने में बीज है।

यथासंख्यन्याय – "यथासंख्यमनुदेशः समानाम्" इस परिभाषा सूत्र से उद्देश्य और विधेय के समान होने पर समसम्बन्धी विधि यथासंख्य (क्रमशः) होती है ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। जैसे – "इको यणचि" सूत्र में चार इक् वर्णों (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान पर चार यण् वर्ण (य्, व्, र्, ल्) क्रमशः प्रवृत्त होते हैं। इसी प्रकार "समूलाकृतजीवेषु हन्–कृञ्–ग्रहः" यहाँ पर यद्यपि विधेय णमुल् एक ही है तथापि समूल–अकृत–जीव इन तीन उपपदों के रहने पर हन्–कृञ्–ग्रह तीन धातुओं के सम्बन्ध में समान संख्याक होने से यथासंख्य की प्रवृत्ति हो जाती है। इसलिये इस सूत्र में समानाम् पद में 'कर्मणि षष्ठी' न मानकर सम्बन्ध सामान्य में षष्ठी मानी है।

18.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी –आचार्य भीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहित
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहित
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वय सहित

18.9 अभ्यास प्रश्न

1. "लिङः सीयुट्" सूत्र में विधेय सीयुट् आगम किसका आद्यवयव होता है?
2. लिङ् के झ प्रत्यय के स्थान पर क्या आदेश होता है?
3. "इटोऽत्" सूत्र में लिङः की अनुवृत्ति किस सूत्र से आती है?
4. "सुट् तिथोः" से विधीयमान सुट् आगम किसको होता है?
5. "आमेतः" सूत्र से किसका विधान किया जाता है?
6. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र किसका अपवाद है?
7. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र किसके पर में क्या आदेश करता है?
8. "सवाभ्यां वाऽमौ" सूत्र में लोटः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति किस सूत्र से होती है?
9. "एत ऐ" सूत्र लोट् लकार में किस पुरुष में प्रयुक्त होता है?
10. "एत ऐ" सूत्र से किसका विधान किया गया है?

इकाई 19 एध् धातु (आत्मनेपद) लङ् एवं विधिलिङ् लकार

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- एध् – वृद्धौ इस धातु के लङ् एवं विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढेंगे।
- लङ् एवं विधिलिङ् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगें।
- लङ् एवं विधिलिङ् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ हों पाएँगें।
- सूत्रों के व्याख्यान करने की विधा में कुशलता प्राप्त करेंगे।

- एध् धातु के लङ् एवं विधिलिङ् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातुरूपों को प्रक्रिया के माध्यम से जानकर उनका प्रयोग करने में समर्थ हो पाएंगे।

19.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई में आपने एध् धातु की आशीर्लिङ् व लोट् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या का विस्तार से अध्ययन किया था। साथ ही सूत्रों के उदाहरण स्वरूप प्रक्रिया के क्रम का भी अभ्यास आपने किया। इस पाठ में आप एध् धातु की लङ् एवं विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया में आने वाले विशेष सूत्रों की व्याख्या का विशेष रूप से अध्ययन करेंगें। प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों में यदि कोई विशेष अंश भी ध्यातव्य है तो उसका भी सप्रसङ्ग विवेचन इस पाठ में किया जाएगा। जैसे पूर्व पाठ में शब्दावली में हमने आपके समक्ष आगम, आदेश व अपवाद के बारे में विशेष रूप से सोदाहरण विवेचन किया था। इसी प्रकार इस इकाई में कुछ अन्य बिंदुओं पर विचार किया जाएगा।

19.2 एध धातु की लङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

एध् धातु की लङ् लकार प्रक्रिया में लट् लकार की प्रक्रिया से भिन्न जो विशेष है उसका पहले निर्देश करना समीचीन होगा, जो इस प्रकार है –

क – ङित् लकार होने से इस लकार में "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र का प्रयोग नहीं होगा। क्योकि यह केवल टित् लकारों में प्रयुक्त होता है। इसको छोड़कर लट् प्रक्रिया में प्रयुक्त अन्य सूत्रों की व्याख्या पुनः संक्षेप में करेंगें।

ख – इसी प्रकार "थासः से" सूत्र भी ङित् लकारों में प्रयुक्त नहीं होता है। क्योंकि यह सूत्र केवल टित् लकारों के थास् को से आदेश करता है।

ग – लङादि लकारों में सामान्यतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से धातु के आदि में अडागम होता है। परन्तु अजादिधातुओं के आदि में "आडजादीनाम्" सूत्र से आडागम होता है। एध् धातु भी अजादि है अतः यहाँ भी अट् आगम को बाधकर आट् आगम होगा। यद्यपि आप अत्–सातत्यगमने धातु की प्रक्रिया के अध्ययन प्रसङ्ग में इस सूत्र के बारे में जान चुके हैं। तथापि प्रक्रियासौकर्य तथा पुनः स्मरण के लिए "आडजादीनाम्" सूत्र का परिचय भी आपको इस पाठ में कराया जाएगा।

घ – आट् आगम होने के पश्चात् ''आटश्च" सूत्र से वृद्ध्येकादेश होता है। यद्यपि यह सूत्र लघुसिद्धान्तकौमुदी में अजन्तपुँल्लिङ्ग प्रकरण में बहुश्रेयसी शब्द की प्रक्रिया में बहुश्रेयस्यै, बहुश्रेयस्याः इत्यादि रूपों की सिद्धिप्रक्रिया के प्रसङ्ग में आया है। तथापि अजन्तपुँल्लिङ्ग प्रकरण के सम्प्रति सन्निहित नहीं होने से पुनः स्मरण के लिए "आटश्च"सूत्र की भी व्याख्या से आपको अवगत कराएँगें।

सूत्र – आतो ङितः 7/2/81

सूत्रवृत्तिः – अतः परस्य ङितामाकारस्य इय स्यात्।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश हो।

व्याख्या – आतः ङितः यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में "अतो येयः" इस सूत्र से अतः और इय् की अनुवृत्ति होती है। "अङ्गस्य" इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य यह पद 'अतः' इस विशेषणीभूत पञ्चम्यन्त का विशेष्य होता है, जिससे अङ्गस्य में श्रूयमाण षष्ठी पञ्चम्यन्त में परिविर्तत होकर अङ्गात् ऐसा बोध कराती है। अतः और अङ्गात् में परस्पर विशेषण–विशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है, फलतः अदन्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त होगा। 'अतः' पद में जो पञ्चमी है वह दिग्योग पञ्चमी है इस कारण परस्य पद का अध्याहार होगा। अदन्तात् अङ्गात् परस्य अर्थात् 'अदन्त अङ्ग से पर' इतना अर्थ फलित होगा। इस सूत्र में 'ङितः' जो पद में जो षष्ठी है वो अवयव षष्ठी है अतः ङित् प्रत्यय के अवयव जो आकार है उसको इय् ऐसा आदेश होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ इस प्रकार होगा – अदन्त अङ्ग से पर में जो ङित् प्रत्यय है उसके आकार को इय् आदेश होता है ।

सूत्र – आडजादीनाम् 6/4/72

सूत्रवृत्तिः – अजादेरङ्गस्य आट् स्यात् लुङ्–लङ्–लृङ्क्षु।

सूत्रानुवाद – लुङ्, लङ् और लृङ् के पर में होने पर अजादि अङ्ग को आट् का आगम हो।

व्याख्या – आट्, अजादीनाम् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। आट् पद प्रथमान्त है। टित् होने से अवयव रूप विधीयमान आद्यवयव के रुप में विहित किया जाता है। अजादीनाम् यह अवयव षष्ठ्यन्त बहुवचनान्त है। अजादीनाम् में अच् आदिः येषां ते अजादयः, तेषाम् अजादीनाम् ऐसा बहुव्रीहि समास है। बहुव्रीहि के अन्यपदार्थ प्रधान होने से अन्यपदार्थ से अङ्ग का परामर्श किया जाता है। क्योंकि इस सूत्र में "अङ्गस्य" सूत्र का अधिकार है। इस अधिकृत अङ्गस्य पद का बहुवचनान्ततया विपरिणाम किया जाता है। ताकि अजादीनाम् के साथ सामानाधिकरण्य (समानविभक्तिकत्व, समानवचनत्व) सम्बन्ध से विशेषम विशेष्य भाव रूप से अन्वय स्थापित हो सके। तो अङ्गानाम् यह विशेष्य होता है और अजादीनाम् विशेषण। अजादीनाम् अङ्गानाम् के साथ आट् का अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध से अन्वय करने पर अजादि अङ्गों को आट् आगम हो ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। जैसा कि आपको ज्ञात है कि अङ्ग संज्ञा "यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम्" सूत्र से की जाती है। अर्थात् जिस प्रकृति से प्रत्यय का विधान हो तदादि शब्दस्वरूप या प्रकृति जो है उसकी अङ्ग संज्ञा होती है। यहाँ धातुप्रकरण सम्बद्ध है अतः धातुओं से प्रत्यय का विधान किए जाने के कारण अङ्गसंज्ञा प्रकृतिभूत धातुओं की होती है। तो इस प्रकार अजादि अङ्ग का तात्पर्य अजादि धातुओं से

है। इस सूत्र में "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से लुङ्लङ्लृङ्क्षु इस सप्तमी बहुवचनान्त पद तथा उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। लुङ् च लङ् च लृङ् च लुङलङ्लृङः, तेषु लुङ्लङ्लृङ्क्षु ऐसा इतरेतरयोग द्वन्द्व समास किया जाता है। परसप्तमी होने से लुङ्–लङ्–लृङ् इनके पर में यह अर्थ होता है। उदात्तः आट् का विशेषण है अतः होने वाला आट् आगम उदात्त स्वर युक्त होता है यह अर्थ फलित होगा। इस प्रकार अनुवृत्त्यादिसहित सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होता है कि लुङ्–लङ्–लृङ् के पर में होने पर अजादि अङ्गों (धातुओं) को उदात्त स्वर युक्त आट् आगम होता है।

यह सूत्र "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र का अपवाद है क्योंकि इस सूत्र का आरम्भ केवल अजादि धातुओं के आट् आगम के विधान के लिए ही किया है।

सूत्र – आटश्च 6/1/90

सूत्रवृत्तिः – आटोऽचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्।

सूत्रानुवाद – आट् से अच् परे रहते पूर्वपर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

व्याख्या – आटः, च यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "एकः पूर्वपरयोः" का अधिकार इस सूत्र में आता है। "वृद्धिरेचि" सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति आती है। "इको यणचि" सूत्र से अचि अनुवृत्त होता है। आटः यह पञ्चम्यन्त पद है। आट् से पर में ऐसा अर्थ होता है। अचि पद के सप्तम्यन्त होने से तस्मिन् परे ऐसा अर्थ होगा। "एकः पूर्वपरयोः" में षष्ठी द्विवचन है, इस अधिकार सूत्र की उपस्थिति से पूर्व और पर के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। तदनुसार आट् से पर में अचि परे पूर्व पर दोनों के स्थान एकादेश होता है यह निष्कृष्ट अर्थ है; और वह एकादेश "वृद्धिरेचि" सूत्र से अनुवृत्त वृद्धि पद के कारण वृद्धिरूप होता है यह सूत्रार्थ फलित हुआ।

इस प्रकार प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले कतिपय सूत्रों के व्याख्यान के उपरान्त आपको लङ् लकार के रूपों की प्रक्रिया का अवबोध कराते है।

उदाहरण – ऐधत – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध्+त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+त इस अवस्था में उत्सर्गतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर अ+एध्+अ+तइस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधत रूप सिद्ध होता है।

ऐधेताम् – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्. लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम्

प्रत्यय करने पर एध.आताम् इस स्थिति में आताम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध्+आ+इय्+ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने पर एध्+ए+ताम् इस अवस्था "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+एताम् इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधेताम् रूप सिद्ध होता है।

ऐधथाः – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्. लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध+थास् इस स्थिति में थास् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+थास् इस स्थिति में "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+अ+थास् ऐसी अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने के बाद थास् के सकार को रूत्व विसर्ग करने पर ऐधथाः रूप सिद्ध हो जाता है। टित् लकार नहीं होने से थास् को से आदेश नहीं होता है।

19.3 एध् धातु की लङ् लकार प्रक्रिया

ऐधन्त – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्+झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध् अ+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" सूत्र से झ को अन्तादेश होने पर एध्+अ+अन्त इस स्थिति में "अतो गुणे" सूत्र से दोनों अकार के स्थान पर पररूप एकादेश अकार करने पर एध्+अन्त इस अवस्था "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+अन्त इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधन्त रूप सिद्ध होता है।

ऐधेथाम् – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्. लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्+आथाम् इस स्थिति में आथाम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+आथाम् इस अवस्था में

"सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आथाम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर एध्+अ+इय्+थाम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और "आद्गुणः" से अ–इ को एकार होने पर एध्+एथाम् इस अवस्था "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+एथाम् इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधेथाम् रूप सिद्ध होता है।

ऐधध्वम् – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में ध्वम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+ध्वम् इस अवस्था में "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर अ+एध्+अ+ध्वम् इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधध्वम् रूप सिद्ध होता है।

ऐधे – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+इ इस स्थिति में इ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+इ इस अवस्था में "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+अ+इ इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐ+ध्+अ+इ इस अवस्था में "आद्गुण" से अकार व इकार के स्थान पर गुणरूप एकादेश करके ऐधे रूप सिद्ध हो जाएगा।

ऐधावहि – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध्+वहि इस स्थिति में वहि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+वहि इस अवस्था में "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+अ+वहि इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐ+ध्+अ+वहि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्रसे अकार के स्थान पर दीर्घ आदेश करके ऐधावहि रूप सिद्ध हो जाएगा।

ऐधामहि – एध् धातु से "अनद्यतने लङ्" सूत्र से लङ् लकार करने पर एध्+लङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महिङ्

प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर एध्+महि इस स्थिति में महि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय अनुबन्ध लोप तथा शप् की भी शित् होने के कारण सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+अ+महि इस अवस्था में "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ+एध्+अ+महि इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐ+ध्+अ+महि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्रसे अकार के स्थान पर दीर्घ आदेश करके ऐधामहि रूप सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार से एध् धातु की लङ् लकार प्रक्रिया संपन्न होती है।

लङ् लकार :

ऐधत, ऐधेताम्, ऐधन्त।

ऐधथाः, ऐधेथाम्, ऐधध्वम्।

ऐधे, ऐधावहि, ऐधामहि।

19.4 एध् धातु की विधिलिङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

यहाँ ध्यातव्य है कि जो सूत्र आशीर्लिङ् लकार की प्रक्रिया में प्रयुक्त हुए थे वही सूत्र विधिलिङ् लकार प्रक्रिया में भी प्रयुक्त होंगे। आशीर्लिङ् लकार से सम्बन्धित इकाई में यद्यपि पूर्व इकाई में उनका अध्ययन आप कर चुके है तथापि विषय के पुनः दृढ़ीकरण के लिए इनका व्याख्यान करते हैं।

विशेषः – एक बिन्दु पर प्रकाश डालना यहां आवश्यक है कि आशिर्लिङ् में प्रयुक्त सूत्र "सुट् तिथोः" जो कि लिङ् के तकार और थकार को सुट् आगम करता है, उसकी प्रवृत्ति सिद्धान्तकौमुदी में भट्टोजिदीक्षित के अनुसार आशीर्लिङ् व विधिलिङ् के आत्मनेपद व विधिलिङ् दोनों में दिखा सकते हैं, क्योंकि लिङ् से आशीर्लिङ् व विधिलिङ् दोनों सामान्यतः अभिप्रेत हैं। उसमें विधिलिङ् के सार्वधातुक लकार होने के कारण "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से उसका लोप कर देते हैं। फलतः लोप हो जाने पर कुछ वैशिष्ट्य वहाँ दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन प्रारम्भिक स्तर के छात्रों को दृष्टिगत कर लिखी गई लघुसिद्धान्त कौमुदी में भट्टोजिदीक्षित के शिष्य वरदराजाचार्य ने इस प्रसङ्ग को विधिलिङ् प्रक्रिया में वैशिष्ट्य प्रतीत नहीं होने तथा लाघव सम्पादन करने के लिए विधिलिङ् लकार में "सुट् तिथोः" सूत्र का प्रस्ताव ही नहीं किया। साक्षात् उसे आशीर्लिङ् प्रक्रिया में ही दर्शाया, जहाँ कि उसके लोप की प्रसक्ति ही नहीं है। जिसका कि पूर्व इकाई में आप सोदाहरण विवेचन कर चुके हैं।

सूत्र – लिङः सीयुट् 3/4/02

सूत्रवृत्तिः – लिङः सीयुट् स्यात्। (सलोपः – एधेत, एधेयाताम्)

सूत्रानुवाद – लिङ् को सीयुट् आगम हो।

व्याख्या – लिङः, सीयुट् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। लिङः यह षष्ठ्यन्त पद है। अवयव षष्ठी है जिससे 'लिङ् का' ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। सीयुट् यह प्रथमान्त है। टित् होने से आद्यवयव होता है। अतः सूत्र का सम्पूर्णार्थ होगा – लिङ् को सीयुट् आगम होता है। लिङ् से यहाँ विधिलिङ् तथा आशीर्लिङ् दोनों अभिप्रेत हैं।

उदाहरण – एधेत – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध्+त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+त इस स्थिति में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध+अ+सीय्+त इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध्+अ+सी+त इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति हो जाने पर एध्+अ+ई+त इतना सिद्ध हो जान परे "आद् गुणः" सूत्र से अकार–इकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुणैकादेश होने पर एधेत रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – झस्य रन् 3/4/105

सूत्रवृत्तिः – लिङो झस्य रन् स्यात्।

सूत्रानुवाद – लिङ् के झकार के स्थान पर रन् आदेश हो।

व्याख्या – झस्य, रन् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। झस्य यह स्थान षष्ठ्यन्त एकवचन है। रन् पद प्रथमान्त आदेशपरक है। स्थान षष्ठी होने से झकार के स्थान पर, रन् आदेश होता है इत्यादि अर्थ प्राप्त होता है। "लिङः सीयुट्" सूत्र से लिङः पद की षष्ठ्यन्त की अनुवृत्ति की जाती है। स्थान षष्ठी होने से लिङ् के स्थान पर यह अर्थ करके सम्पूर्ण सूत्रार्थ लब्ध होता है कि – लिङ् के झकार को रन् आदेश होता है।

उदाहरण – एधेरन् – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्+झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+झ इस अवस्था में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+झ इस अवस्था मे "झस्य रन्" इस सूत्र से झ को रन् आदेश करने पर एध्+अ+सीय्+रन् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध्+अ+सी+रन् इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति हो जाने पर एध्+अ+ई+रन् इतना सिद्ध हो जान परे "आद् गुणः" सूत्र से अकार–इकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुणैकादेश होने पर एध्+ए+रन् ऐसा मिलाने पर एधेरन् रूप सम्पन्न होता है।

सूत्र – इटोऽत् 3/4/106

सूत्रवृत्तिः – लिङादेशस्य इटोऽत् स्यात्।

सूत्रानुवाद – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश हो।

व्याख्या – इटः, अत् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "लिङः सीयुट्" से लिङः पद की अनुवृत्ति होती है। इटः यह स्थानषष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। इट् के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। अत् यह आदेश परक है। यहाँ आदेश अकारमात्र ही है। तकार केवल मुखसुखार्थ उच्चारणार्थ है, न कि तपरकरण। तपरकरण करने पर दीर्घादि की व्यावृत्ति होती है, केवल तत्काल सदृश उच्चारणकाल का ही ग्रहण हो इसलिए तपरकरण किया जाता है। परन्तु प्रकृ त स्थल में ऐसा नहीं है क्योकि अकार के विधीयमान होने से वह दीर्घादि सवर्णों का ग्राहक नहीं होता, अतः व्यावर्त्य के अभाव में तपरकरण मानने की भ्रान्ति न हो एसलिए विस्तार से बताया गया है। अनुवर्तमान लिङः पद भी षष्ठ्यन्त एकवचनान्त है। स्थान षष्ठी होने से यह भी लिङ् के स्थान पर ऐसा बोध कराता है। तो इस प्रकार से सूत्र का फलितार्थ होता है कि – लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर 'अ' आदेश होता है।

उदाहरण – एधेय – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर एध्+इ इस स्थिति में इ–प्रत्यय की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+इ इस अवस्था में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+इ इस अवस्था में "इटोऽत्" सूत्र से इ–प्रत्यय के स्थान पर अ–आदेश करने पर एध्+अ+सीय्+अ इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से अनन्त्य सकार का लोप करने के बाद एध् अ+ईय्+अ इस अवस्था के पश्चात् "आद्गुणः" सूत्र से अकार–ईकार को एकाररूप गुणैकादेश करने पर एधेय रूप सम्पन्न होता है।

19.5 एध् धातु की विधिलिङ् लकार प्रक्रिया

एधेयाताम् – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में आताम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय और अनुबन्धलोप करने पर एध्+आ+आताम् इस स्थिति में "लिङः सीयुट्"सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+आताम् इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति (लोप) हो जाने पर एध्+अ+ईय्+आताम् इतना

सिद्ध हो जान परे "आद् गुणः" सूत्र से अकार व ईकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुण एकादेश होने पर एधेयाताम् रूप सिद्ध होता है।

एधेथाः – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति मे उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् प्रत्यय करने पर एध्+थास् इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+थास् इस अवस्था में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+थास् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से वल् पर में होने से यकार का लोप होने पर एध्+अ+सी+थास् इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति हो जाने पर एध्+अ+ई+थास् इतना सिद्ध हो जाने पर "आद् गुणः" सूत्र से अकार–इकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुणैकादेश होने पर एध् एथास्, अब सकार का रुत्व विसर्ग करके मिलाने पर एधेथाः रूप सम्पन्न होता है।

एधेयाथाम् – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्. लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आथाम् प्रत्यय करने पर एध्+आथाम् इस स्थिति में आथाम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय और अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+आथाम् इस स्थिति में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+आथाम् इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति (लोप) हो जाने पर एध्+अ+ईय्+आथाम् इतना सिद्ध हो जाने पर "आद् गुणः" सूत्र से अकार व ईकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुण एकादेश होने पर एधेयाथाम् रूप सिद्ध होता है।

एधेध्वम् – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति मेंउसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में ध्वम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय और अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+ध्वम् इस स्थिति में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+ध्वम् इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति (लोप) हो जाने पर एध्+अ+ईय्+ध्वम् इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" इस सूत्र से वल् (धकार) के पर में होने पर ईय् के यकार का लोप होने पर एध्+अ+ई+ध्वम् इतना सिद्ध हो जाने पर "आद् गुणः" सूत्र से अकार व ईकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुण एकादेश होने पर एधेध्वम् रूप सिद्ध हो जाता है।

एधेवहि – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र

से आत्मनेपद उत्तम पुरुष द्विवचन विवक्षा में वहि प्रत्यय करने पर एध्+वहि इस स्थिति में वहि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप" सूत्र से शप्–प्रत्यय और अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+वहि इस स्थिति में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+वहि इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति (लोप) हो जाने पर एध्+अ+ईय्+वहि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" इस सूत्र से वल् (वकार) के पर में होने पर ईय् के यकार का लोप होने पर एध्+अ+ई+वहि इतना सिद्ध हो जाने पर "आद् गुणः" सूत्र से अकार व ईकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुण एकादेश होने पर एधेवहि रूप सिद्ध हो जाता है।

एधेमहि – एध् धातु से "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्" सूत्र से विधिलिङ् लकार करने पर एध्+लिङ् इस स्थिति मेंउसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से आत्मनेपद उत्तम पुरुष बहुवचन विवक्षा में महि प्रत्यय करने पर एध्+महि इस स्थिति में महि की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने पर "कर्तरि शप्" सूत्र से शप्–प्रत्यय और अनुबन्धलोप करने पर एध्+अ+महि इस स्थिति में "लिङः सीयुट्" सूत्र से सीयुट् आगम करने तथा अनुबन्ध लोप होने पर एध्+अ+सीय्+महि इस अवस्था में "लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य" सूत्र से सकार की निवृत्ति (लोप) हो जाने पर एध्+अ+ईय्+महि इस अवस्था में "लोपो व्योर्वलि" इस सूत्र से वल् (मकार) के पर में होने पर ईय् के यकार का लोप होने पर एध्+अ+ई+महि इतना सिद्ध हो जाने पर "आद् गुणः" सूत्र से अकार व ईकार दोनों के स्थान पर एकाररूप गुण एकादेश होने पर एधेमहि रूप सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार यह एध् धातु की लङ् एवं विधिलिङ् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ यहां समाप्त होता है।

विधिलिङ् लकार :

एधेत, एधेयाताम्, एधेरन्।

एधेथाः, एधेयाथाम्, एधेध्वम्।

एधेय, एधेवहि, एधेमहि।

19.6 सारांश

इस इकाई में आपने एध्–धातु के लङ् एवं विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया एवं प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले सूत्रों के बारे में पढ़ा। पहले आपने लङ् लकार के बारे में अध्ययन किया। यह एक सार्वधातुक लकार है। अतः इसमें शबादिकार्य विहित होते हैं। वस्तुतः लट् लकार के समान लङ् प्रक्रिया होने से प्रक्रियासाधन में किसी नवीन सूत्र की आवश्यकता नहीं हुई। केवल एक सूत्र की हमनें व्याख्या की, जो है – "आटश्च"। यह सूत्र धातु से पूर्व में अट् आगम के विधायक सूत्र "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र के अपवाद सूत्र "आडजादीनाम्" (जो कि अजादि

धातु के रहने पर धातु से पूर्व में अट् को बाधकर आट् आगम का विधान करता है) के प्रवृत्त होने पर उपयोग में आता है। आट् से अच् पर में रहते पूर्व पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश हो ऐसा सूत्रार्थ है। इसका फल यह हुआ कि आट् आगम के आ से पर में एध् धातु के अच्–वर्ण एकार के पर में आ और ए दोनों के स्थान पर ऐकार वृद्धि हो जाती है। इस प्रकार ऐधत, ऐधेताम् इत्यादि लङ् रूपों का अध्ययन आपने किया।

इसके बाद विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया के सम्बन्ध में पढ़ा। पूर्ववत् यह भी एक सार्वधातुक लकार है, अतः इसमें शबादिकार्य भी होते हैं। आशीर्लिङ् लकार के "लिङाशिषि" सूत्र के कारण आशिर्लिङ् लकार आर्धधातुक हो जाता है। अतः उसमें शबादिकार्य नहीं होते। यह मुख्य भेद रहा आशिर्लिङ् और विधिलिङ् लकार प्रक्रिया में। बाकि यदि देखा जाए तो आशिर्लिङ् प्रक्रिया के ही तीन मुख्य सूत्रों का उपयोग विधिलिङ् में होता है अतः उन सूत्रों से सम्बन्धित ज्ञान आपने अर्जित किया। जैसे कि स्मरण हो – पहला सूत्र था "लिङः सीयुट्"। यह सूत्र लिङ् लकार को सीयुट् आगम करता है। टित् होने के कारण यह आद्यवयव के रूप में होता है। इस क्रम में दूसरा सूत्र था "झस्य रन्" इससे लिङ् के झप्रत्यय को रन् आदेश होता है। और विधिलिङ् प्रक्रिया का अन्तिम सूत्र था "इटोऽत्", इससे लिङ् के स्थान पर आदेश हुए इट् के स्थान पर अकार आदेश होता है। तो इस प्रकार आपने विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया में आए सूत्रों का विस्तार से अध्ययन कर कुछ धातुरूपों की प्रक्रिया के बारे में जाना। शेष कुछ का परिचय आप पाठ के अन्त में करेंगें।

19.7 शब्दावली

आगम – टित्–कित्–मित् इत्यादि लिङ्गों से चिह्नित आगम होते है। जो किसी के अवयव के रूप में आते हैं। अवयव के रूप में विधीयमान ऐसा अर्थ समझना चाहिए। इसलिए मित्रवत् आगमः ऐसा कहा जाता है। क्योंकि ये किसी को हटाकर उसके स्थान पर नहीं होते हैं। अपितु अवयव रूप में होते हैं। इसलिए अवयव षष्ठी का अर्थ अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध माना जाता है।

आदेश – आगम के विपरीत आदेश किसी के स्थान पर होते हैं। यह किसी वर्ण अथवा पद को हटाकर प्रवृत्त होते हैं। इसलिए शत्रुवत् आदेशः ऐसा कहा जाता है। आदेश निवर्तक (हटाने वाला) होता है जो किसी स्थानी के स्थान पर उसको निवृत्त करके होता है। स्थानी निवर्त्य होता है जिसको कि आदेश के द्वारा निवृत्त कर दिया जाता है अर्थात् हटा दिया जाता है। इसलिए स्थान षष्ठी का अर्थ निवर्त्यनिवर्तकभाव सम्बन्ध माना जाता है।

एकादेश – "एकः पूर्वपरयोः" यह एक अधिकार सूत्र है। इस सूत्र के अधिकार में ही "आद्गुणः", "वृद्धिरेचि", "अकः सवर्णे दीर्घः", "आटश्च" इत्यादि सूत्र पढ़े गए हैं। इसलिए इन सूत्रों के द्वारा विधीयमान आदेश पूर्व और पर इन दोनों वर्णों के स्थान पर एक ही होता है। इसलिए इसे एकादेश कहते हैं।

अपवाद – "यत्कर्तृकावश्यप्राप्तौ यो विधिरारभ्यते स तस्यापवादः" इस नियम के अनुसार जब किसी विधिसूत्र की किसी स्थल पर अवश्य प्राप्ति हो तो भी किसी अन्य विधिसूत्र का आरम्भ करें तो वह अवश्यप्राप्तविधि का अपवाद होता है । जैसे – लोट् के एकार के स्थान पर "आमेतः" से आत्व की अवश्य प्राप्ति होने पर भी "सवाभ्यां वाऽमौ" यह सूत्र आरम्भ किया गया। क्योंकि लोट् लकार में एकार जहाँ जहाँ मिलेगा वहाँ–वहाँ आमेतः की अवश्य प्राप्ति है। लेकिन जहाँ पर सकार और वकार से पर में लोट् का एकार मिलता है वहाँ भी अगर आकार होने लगे तो सवाभ्यां वाऽमौ सूत्र निरवकाश हो जाएगा अर्थात् कहीं प्रवृत्त नहीं हो पाएगा। अतः किसी विधि का निरवकाश होना ही अपवाद बनने में बीज है। ठीक इसी प्रकार यहाँ "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से लुङ्–लङ्–लृङ् लकारों के पर में सभी धातुओं से अट् आगम प्राप्त होता है। परन्तु "आडजादीनाम्" सूत्र से केवल अजादि धातुओं को ही आट् आगम होता है। अगर सभी जगह "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से अट् आगम होने लगे तो "आडजादीनाम्" सूत्र निरवकाश होकर कहीं भी लक्ष्य में प्रवृत्त नहीं होकर व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए "आडजादीनाम्" यह सूत्र निरवकाश होकर पूर्व सूत्र का अपवाद बन जाता है। तो इस प्रकार "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" यह उत्सर्ग सूत्र अपवाद के विषय को छोड़कर अन्यत्र अर्थात् अजादि भिन्न धातुओं को छोड़कर अन्यत्र प्रवृत्त होता है। अजादि धातुओं में तो "आडजादीनाम्" ही लगेगा ऐसा निश्चय कर लेना चाहिए।

19.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य भीमसेनशास्त्रीकृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेवस्नातकशास्त्रीकृत आशुबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दी व्याख्या सहित।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथचौधरीकृत चन्द्रकला संस्कृतहिन्दी–व्याख्याद्वय सहित।

19.9 अभ्यास प्रश्न

1. ऐधेताम् रूप सिद्ध करने के लिए आताम् के आकार को इय् आदेश किस सूत्र से होता है?
2. लङ् लकार के मध्यम पुरुष एकवचन में थास् के स्थान पर'से' आदेश क्योंनहीं होता है?
3. "आडजादीनाम्" सूत्र किस सूत्र का अपवाद है?
4. "आडजादीनाम्" सूत्र किन धातुओं के पूर्व में आट् काविधान करता है?

5. "लिङः सीयुट्" सूत्र से होने वाला सीयुट् किसका आगम है?
6. सीयुट् के सकार का लोप विधान किस सूत्र से किया जाता है?
7. "झस्य रन्" सूत्र से रन् आदेश 'झ्'–वर्णमात्र के स्थान पर होता है या सम्पूर्ण 'झ' के स्थान पर?
8. "इटोऽत्" सूत्र में लिङ् की अनुवृत्ति किस सूत्र से आती है?
9. "इटोऽत्" सूत्र से अत् आदेश में तपरकरण का कोई प्रयोजन है अथवा नहीं?
10. "इटोऽत्" सूत्र में अत् में तपरकरण क्यों स्वीकार नहीं किया गया है?

इकाई 20 एध् धातु (आत्मनेपद) लुङ् एवं लृङ् लकार

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 एध् धातु की लुङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

20.3 एध् धातु के लुङ् लकार प्रक्रिया

20.4 एध् धातु की लृङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

20.5 एध् धातु की लृङ् लकार प्रक्रिया

20.6 सारांश

20.7 शब्दावली

20.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.9 अभ्यास प्रश्न

20.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- एध् – वृद्धौ इस धातु के लुङ् एवं लृङ् लकार की प्रक्रिया के बारे में पढेंगे।
- लुङ् एवं लृङ् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे।
- लुङ् एवं लृङ् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ हो पाएँगे।

- लुङ् एवं लृङ् लकार प्रक्रिया के मध्य आने वाले सूत्रों की व्याख्या में आने वाले पारिभाषिक पदार्थों को विशेष रूप से जान पाएँगे।
- सूत्रों के व्याख्यान करने की विधा में कुशलता प्राप्त करेंगे; तथा
- एध् धातु के लुङ् एवं लृङ् लकार के प्रत्येक पुरुष व वचन के अनुसार धातुरूपों को प्रक्रिया के माध्यम से जानकर उनका प्रयोग करने में सक्षम बनेंगें।

20.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आपके पाठ्यक्रमानुसार इससे पूर्वतन इकाई में आपने एध् धातु की लङ् व विधिलिङ् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित सूत्रों की व्याख्या का विस्तार से अध्ययन किया था। इस प्रकार पूर्वतन चार इकाईयों में आपने एध् धातु के आठ लकारों के रूपों के बारे में विस्तार से जाना। उन उन रूपों की प्रक्रिया के मध्य आने वाले सभी सूत्रों के बारे में भी विस्तार से ज्ञानार्जन किया। अब इस इकाई में शेष दो लकारों से सम्बन्धित रूपों की प्रक्रिया तथा प्रक्रिया में आने वाले सूत्रों का आप विस्तार से अध्ययन करेंगे। इस तरह से इस पाठ के अध्ययन के उपरान्त आप एध् धातु के दस लकारों में भी सभी रूपों को जानकर प्रयोग करने में आप दक्षता प्राप्त कर लेंगें।

20.2 एध् धातु की लुङ् लकार प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

एध् धातु की लुङ् लकार प्रक्रिया में जो सूत्र प्रयुक्त होंगे उनके बारे में अब विस्तार से व्याख्या तथा विशेष अंशो का ज्ञापन क्रमशः आगे किया जा रहा है। इस लकार के भी लङ्वत् ङित् होने के कारण निम्नलिखित बिन्दु आपको ध्यान में रखने हैं –

क – ङित् लकार होने से इस लकार में भी "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र का प्रयोग नहीं होगा; क्योंकि यह केवल टित् लकारों में प्रयुक्त होता है।

ख – इसी प्रकार "थासः से" सूत्र भी ङित् लकारों में प्रयुक्त नहीं होता है; क्योंकि यह सूत्र केवल टित् लकारों के थास् को से आदेश करता है।

ग – लङादि लकारों में सामान्यतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से धातु के आदि में अडागम होता है। परन्तु अजादि धातुओं के आदि में "आडजादीनाम्" सूत्र से आडागम होता है। एध् धातु भी अजादि है अतः यहाँ भी अट् आगम को बाधकर आट् आगम होगा।

घ – आट् आगम होने के पश्चात् "आटश्च" सूत्र से वृद्ध्येकादेश होता है।

ङ – इस लकार में शप् को बाधकर च्लि प्रत्यय होता है। और च्लि के स्थान पर सिच् आदेश किया जाता है। सिच् की आर्धधातुकसंज्ञा होने के कारण इडागम का विधान भी किया जाता है।

सूत्र – आडजादीनाम् 6/4/72

सूत्रवृत्तिः – अजादेरङ्गस्य आट् स्यात् लुङ्–लङ्–लृङ्क्षु।

सूत्रानुवाद – लुङ्, लङ् और लृङ् के पर में होने पर अजादि अङ्ग को आट् का आगम हो।

व्याख्या – आट्, अजादीनाम् यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। आट् पद प्रथमान्त है। टित् होने से अवयव रूप विधीयमान आद्यवयव के रुप में विहित किया जाता है। अजादीनाम् यह अवयव षष्ठ्यन्त बहुवचनान्त है। अजादीनाम् में अच् आदिः येषां ते अजादयः, तेषाम् अजादीनाम् ऐसा बहुव्रीहि समास है। बहुव्रीहि के अन्यपदार्थ प्रधान होने से अन्यपदार्थ से अङ्ग का परामर्श किया जाता है। क्योंकि इस सूत्र में "अङ्गस्य" सूत्र का अधिकार है। इस अधिकृत अङ्गस्य पद का बहुवचनान्ततया विपरिणाम किया जाता है। ताकि अजादीनाम् के साथ सामानाधिकरण्य (समानविभक्तिकत्व, समानवचनत्व) सम्बन्ध से विशेषण विशेष्य भाव रूप से अन्वय स्थापित हो सके। तो अङ्गानाम् यह विशेष्य होता है और अजादीनाम् विशेषण। अजादीनाम् अङ्गानाम् के साथ आट् का अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध से अन्वय करने पर अजादि अङ्गों को आट् आगम हो ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। जैसा कि आपको ज्ञात है कि अङ्ग संज्ञा "यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम्" सूत्र से की जाती है। अर्थात् जिस प्रकृति से प्रत्यय का विधान हो तदादि शब्दस्वरूप या प्रकृति जो है उसकी अङ्ग संज्ञा होती है। यहाँ धातु प्रकरण सम्बद्ध है अतः धातुओं से प्रत्यय का विधान किए जाने के कारण अङ्गसंज्ञा प्रकृतिभूत धातुओं की होती है। तो इस प्रकार अजादि अङ्ग का तात्पर्य अजादि धातुओं से है। इस सूत्र में "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से लुङ्लङ्लृङ्क्षु इस सप्तमी बहुवचनान्त पद तथा उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। लुङ् च लङ् च लृङ् च लुङलङ्लृङः, तेषु लुङ्लङ्लृङ्क्षु ऐसा इतरेतर योग द्वन्द्व समास किया जाता है। पर सप्तमी होने से लुङ्–लङ्–लृङ् इनके पर में यह अर्थ होता है। उदात्तः आट् का विशेषण है अतः होने वाला आट् आगम उदात्त स्वर युक्त होता है यह अर्थ फलित होगा। इस प्रकार अनुवृत्त्यादिसहित सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होता है कि लुङ्–लङ्–लृङ् के पर में होने पर अजादि अङ्गों (धातुओं) को उदात्त स्वर युक्त आट् आगम होता है।

यह सूत्र "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र का अपवाद है क्योंकि इस सूत्र का आरम्भ केवल अजादि धातुओं के आट् आगम के विधान के लिए ही किया है।

सूत्र – आटश्च 6/1/90

सूत्रवृत्तिः – आटोऽचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्।

सूत्रानुवाद – आट् से अच् परे रहते पूर्वपर के स्थान पर वृद्धि एकादेश होता है।

व्याख्या – आटः, च यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। "एकः पूर्वपरयोः" का अधिकार इस सूत्र में आता है। "वृद्धिरेचि" सूत्र से वृद्धि पद की अनुवृत्ति आती है। "इको यणचि" सूत्र से

अचि अनुवृत्त होता है। आटः यह पञ्चम्यन्त पद है। आट् से पर में ऐसा अर्थ होता है। अचि पद के सप्तम्यन्त होने से तस्मिन् परे ऐसा अर्थ होगा। "एकः पूर्वपरयोः" में षष्ठी द्विवचन है, इस अधिकार सूत्र की उपस्थिति से पूर्व और पर के स्थान पर ऐसा अर्थ मिलता है। तदनुसार आट् से पर में अचि परे पूर्व पर दोनों के स्थान एकादेश होता है यह निष्कृष्ट अर्थ है और वह एकादेश "वृद्धिरेचि" सूत्र से अनुवृत्त वृद्धि पद के कारण वृद्धिरूप होता है। अतः यह सूत्रार्थ फलित हुआ।

सूत्र – आत्मनेपदेष्वनतः 7/1/5

सूत्रवृत्तिः – अनकारात् परस्य आत्मनेपदेषु झस्य 'अत्' इत्यादेशः स्यात्।

सूत्रानुवाद – अत् (ह्रस्व अकार) से भिन्न वर्ण से परे आत्मनेपद प्रत्यय के अवयव 'झ्' को 'अत्' आदेश होता है।

व्याख्या – आत्मनेपदेषु, अनतः यह पदविभाग है। यह द्विपद सूत्र है। 'आत्मनेपदेषु' यह सप्तमी बहुवचनान्त है जिसका अर्थ होगा आत्मनेपद में। 'अनतः' पञ्चमी एकवचनान्त है। 'न अत् अनत्' (नञ् तत्पुरुष) तस्माद् अनतः ऐसा विग्रह है। भिन्नार्थक नञ् से समास होने से अत् से भिन्न वर्ण से परे आत्मनेपदेषु (आत्मनेपद प्रत्ययों में) इतना अर्थ प्राप्त हुआ। इस सूत्र में "झोऽन्तः" सूत्र से झः यह षष्ठी एकवचनान्त पद अनुवृत्त होता है। यह स्थान षष्ठी है। झ् के स्थान पर इत्यादि अर्थ होगा। "अदभ्यस्तात्" सूत्र से अत् पद की अनुवृत्ति होती है, जो कि आदेशरूप विधीयमान है। तो इस प्रकार से सम्पूर्ण सूत्रार्थ हुआ कि – अत् से भिन्न वर्ण से परे आत्मनेपदेषु (आत्मनेपद प्रत्ययों में) झ के अवयव झ् के स्थान पर अत् आदेश होता है। यह सूत्र "झोऽन्तः" सूत्र का अपवाद है। अतः उसी की तरह जैसे वहाँ झि के अवयव झ्–मात्र को अन्त आदेश हुआ था तद्वत् यहाँ भी झ के अवयव झ्–मात्र को अत् आदेश होगा। झ में से अवशिष्ट अकार के सम्मेलन से अत ऐसा आदेश प्रतीत होता है।

सूत्र में अनतः व आत्मनेपदेषु पदों का प्रयोजन – सूत्र में अनतः पद का प्रयोजन यह है कि लट् लकार में एधन्ते इत्यादि प्रयोगों में जहाँ शप् किया जाता है वहाँ एध्+अ+झ इस अवस्था में झ को अत् आदेश न हो जाए। क्योंकि शप् का अकार ही शेष रहता है उससे पर में अत् आदेश की प्रवृत्ति रोकने के लिए अनतः आवश्यक है।

इसी प्रकार आत्मनेपदेषु कहने पर परस्मैपद प्रत्यय झि के अवयव झ् को अत् आदेश नहीं होता। अन्यथा शृण्वन्ति = शृणु+झि इस अवस्था में भी ह्रस्व अकार से भिन्न वर्ण इकार से पर में झि के अवयव झ् को अन्त् आदेश बाधकर अत् आदेश होने लगता।

उदाहरण – ऐधिषत – एध् धातु से "लुङ्" सूत्र से लुङ् लकार करने पर एध्+लुङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष बहुवचन विवक्षा में झ प्रत्यय करने पर एध्+झ इस स्थिति में झ की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय की प्राप्ति होने पर

उसे बाधकर "च्लि लुङि" सूत्र से च्लि विकरण प्रत्यय करने पर एध्+च्लि+झ इस अवस्था में "च्लेः सिच्" इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश करने पर (सिच् में इकार व चकार इत्संज्ञक होने से स् मात्र शेष रहता है) एध्+स्+झ इस अवस्था में सिच् की "आर्धधातुकं शेषः" इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञाकरने पर "आर्धधातुस्येड्वलादेः" इस सूत्र से सिच् को वलादि आर्धधातुक प्रत्यय होने के कारण इट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर एध्+इ्+स्+झ इस अवस्था में उत्सर्गतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ्+एध्+इस्+झ इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐध्इ स्झ इस स्थिति में "आदेश प्रत्यययोः" इस सूत्र से इण् रूप इकार से पर में प्रत्यय के अवयव रूप सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश करने पर ऐध्+इष्+झ "आत्मनेपदेष्वनतः" सूत्र से झ प्रत्यय के अवयव झ् के स्थानपर अत् आदेश करने पर ऐध्+इष्+अत्–अ इस अवस्था में वर्ण सम्मेलन करने पर ऐधिषत रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात् 8/3/78

सूत्रवृत्तिः – इण्णन्तादङ्गात् परेषां षीध्वंलुङ्लिटां धस्य ढः स्यात्।

सूत्रानुवाद – इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्ग में) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को मूर्धन्य (ढकार) आदेश हो।

व्याख्या – इणः, षीध्वम्–लुङ्–लिटाम्, धः, अङ्गात् यह पदविभाग है। चतुष्पदात्मक सूत्र है। "अपदान्तस्य मूर्धन्यः" इस सूत्र से मूर्धन्य पद की अनुवृत्ति होती है। इणः यह पञ्चम्यन्त अङ्गात् पद का विशेषण है। अतः विशेषणत्वात् तदन्तविधि होकर इण्णन्तात् अङ्गात् = इणन्त (जिसके अन्त मे इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल हो, इण् प्रत्याहार सर्वदा पर णकार तक होता है यह ध्यातव्य है।) अङ्ग से पर में ऐसा अर्थ हो जाता है। षीध्वं च लुङ् च लिट् च षीध्वंलुङ्लिटः, तेषां षीध्वंलुङ्लिटाम् इति इतरेतरद्वन्द्वसमास से षष्ठीबहुवचनान्त, अवयवषष्ठी। इनके अवयव धकार को ऐसा अर्थ प्राप्त होता है। मूर्धन्य शब्द धकार के स्थान पर होने वाले आदेश का बोध कराता है। स्थानेऽन्तरतमः इस सूत्र के माध्यम से ध के स्थान पर होने वाला मूर्धन्य आदेश संवार–नाद–घोष–महाप्राण यत्नवान् ढकार ही होता है। इसलिए सूत्रवृत्ति में ग्रन्थकार ने धकार को ढकार होता है ऐसा साक्षात् कह दिया है। इस प्रकार से समुदित सूत्रार्थ – इणन्त अङ्ग से परे षीध्वम् (आशीर्लिङ्ग में) शब्द के तथा लुङ् और लिट् के धकार को मूर्धन्य वर्ण ढकार आदेश हो ये फलित होता है।

उदाहरण – ऐधिढ्वम् – एध् धातु से "लुङ्" सूत्र से लुङ् लकार करने पर एध्+लुङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से मध्यम पुरुष बहुवचन विवक्षा में ध्वम् प्रत्यय करने पर एध्+ध्वम् इस स्थिति में ध्वम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय की प्राप्ति होने पर उसे बाधकर "च्लि लुङि" सूत्र से च्लि विकरण प्रत्यय करने पर एध्+च्लि+ध्वम् इस अवस्था

में "च्लेः सिच्" इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश करने पर (सिच् में इकार व चकार इत्संज्ञक होने से स् मात्र शेष रहता है) एध्+स्+ध्वम् इस अवस्था में सिच् की "आर्धधातुकं शेषः" इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञाकरने पर "आर्धधातुस्येड्वलादेः" इस सूत्र से सिच् को वलादि आर्धधातुक प्रत्यय होने के कारण इट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर एध्+इस्+ध्वम् इस अवस्था में उत्सर्गतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ्+एध्+इस्+ध्वम् इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐध्+इस्+ध्वम् इस स्थिति में "धि च" इस सूत्र से धकार के पर में सिच् के सकार का लोप करने पर ऐध्+इ+ध्वम् इस अवस्था में "इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्" इस सूत्र से इणन्त अङ्ग एधि से परे लुङ् के धकार को (ध्वम् के धकार को) मूर्धन्य ढकार आदेश करने पर ऐध्+इ+ढ्+वम् इस अवस्था में वर्ण सम्मेलन करने पर ऐधिढ्वम् रूप सिद्ध होता है।

20.3 एध् धातु के लुङ् लकार प्रक्रिया

ऐधिष्ट – एध् धातु से "लुङ्" सूत्र से लुङ् लकार करने पर एध्+लुङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्..." इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष एकवचन विवक्षा में त प्रत्यय करने पर एध्+त इस स्थिति में त की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय की प्राप्ति होने पर उसे बाधकर "च्लि लुङि" सूत्र से च्लि विकरण प्रत्यय करने पर एध्+च्लि्+त इस अवस्था में "च्लेः सिच्" इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश करने पर (सिच् में इकार व चकार इत्संज्ञक होने से स् मात्र शेष रहता है) एध्+स्+त इस अवस्था में सिच् की "आर्धधातुकं शेषः" इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञाकरने पर "आर्धधातुस्येड्वलादेः" इस सूत्र से सिच् को वलादि आर्धधातुक प्रत्यय होने के कारण इट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर एध्+इ+स्+त इस अवस्था में उत्सर्गतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ्+एध्+इ+स्+त इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐध्इ+स्+त इस स्थिति में "आदेश प्रत्यययोः" इस सूत्र से इण् रूप इकार से पर में प्रत्यय के अवयव रूप सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश करने पर ऐध्+इ+ष्+त "ष्टुना ष्टुः" सूत्र से तकार तो ष्टुत्व होकर टकार होने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधिष्ट रूप सिद्ध हो जाता है।

ऐधिषाताम् – एध् धातु से "लुङ्" सूत्र से लुङ् लकार करने पर एध् + लुङ् इस स्थिति में उसके स्थान पर "तिपतस्झिसिप्थस्" इत्यादि सूत्र से प्रथम पुरुष द्विवचन विवक्षा में आताम् प्रत्यय करने पर एध्+आताम् इस स्थिति में आताम् की "तिङ्शित्सार्वधातुकम्" इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञा करने के बाद "कर्तरि शप्" सूत्र से शप् विकरण प्रत्यय की प्राप्ति होने पर उसे बाधकर "च्लि लुङि" सूत्र से च्लि विकरण प्रत्यय करने पर एध्+च्लि्+आताम् इस अवस्था में "च्लेः सिच्" इस सूत्र से च्लि के स्थान पर सिच् आदेश करने पर (सिच् में इकार व चकार इत्संज्ञक होने से स् मात्र शेष रहता है) एध्+स्+आताम् इस अवस्था में

सिच् की "आर्धधातुकं शेषः" इस सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करने पर "आर्धधातुस्येड्वलादेः" इस सूत्र से सिच् को वलादि आर्धधातुक प्रत्यय होने के कारण इट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर एध्+इ+स्+आताम् इस अवस्था में उत्सर्गतः "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर "आडजादीनाम्" इस सूत्र से आडागम करने पर आ्+एध्+इस्+आताम् इस अवस्था में "आटश्च" सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश ऐकार होने पर ऐध्+इस्+आताम् इस स्थिति में "आदेश प्रत्यययोः" इस सूत्र से इण् रूप इकार से पर में प्रत्यय के अवयव रूप सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश करने पर ऐध्+इष्+आताम् हो जाने पर वर्णसम्मेलन करने पर ऐधिषाताम् रूप सिद्ध हो जाता है।

ऐधिष्ठाः – यह रूप मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। यहाँ भी एध् धातु से मध्यम पुरुष एकवचन विवक्षा में थास् थास् की सार्वधातुकसंज्ञा, उसके बाद च्लि प्रत्यय तथा च्लि को सिच् आदेश, सिच् को इडागम धातु को, "आडजादीनाम्" से आडागम तथा "आटश्च" से वृद्धिरूप एकादेश, ऐध् इ स् थास् सिच् के सकार को षकार तथा थास् के थ को ष्टुत्व करके अन्तिम सकार को रुत्व विसर्ग करके ऐधिष्ठाः रूप बनेगा।

ऐधिषाथाम् – एध् धातु से मध्यम पुरुष द्विवचन में यह रूप बनता है। सम्पूर्ण प्रक्रिया ऐधिषाताम् की तरह पूर्ववत् होगी। केवल आताम् के स्थान पर आथाम् प्रत्यय होगा।

ऐधिषि – यहाँ भी प्रक्रिया में कोई नवीन सूत्र प्रयुक्त नहीं हुआ है। यहाँ पर एध् धातु से उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इट् प्रत्यय अनुबन्ध लोप करके इ शेष रहा, इ की सार्वधातुकसंज्ञा, उसके बाद च्लि प्रत्यय तथा च्लि को सिच् आदेश, सिच् को इडागम, धातु को "आडजादीनाम्" से आडागम तथा "आटश्च" से वृद्धिरूप एकादेश, ऐध् इ स् इ, सिच् के सकार को षकार तथा वर्णसम्मेलन करके ऐधिषि रूप बनेगा।

ऐधिष्वहि/ऐधिष्महि – यहाँ भी प्रक्रिया में कोई नवीन सूत्र प्रयुक्त नहीं हुआ है। यहाँ पर एध् धातु से उत्तम पुरुष द्विवचन तथा बहुवचन विवक्षा में वहि/महि प्रत्यय, वहि/महि की सार्वधातुकसंज्ञा, उसके बाद च्लि प्रत्यय तथा च्लि को सिच् आदेश, सिच् को इडागम, धातु को "आडजादीनाम्" से आडागम तथा "आटश्च" से वृद्धिरूप एकादेश, ऐध् इ स् वहि/महि, सिच् के सकार को षकार तथा वर्णसम्मेलन करके ऐधिष्वहि/ऐधिष्महि रूप बनेंगें।

लुङ् लकार –

ऐधिष्ट, ऐधिषाताम्, ऐधिषत।

ऐधिष्ठाः, ऐधिषाथाम्, ऐधिढ्वम्।

ऐधिषि, ऐधिष्वहि, ऐधिष्महि।

20.4 एध् धातु की लृङ् लकार में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

एध् धातु की लृङ् लकार प्रक्रिया में वैसे तो कोई भी नया सूत्र कार्यविशेष के लिए नहीं लगता। लृङ् लकार प्रक्रिया में प्रायः सभी सूत्र एध् धातु की लुट् लकार तथा लृट् प्रक्रिया के ही समान हैं। लृङ् लकार के टित् लकार नहीं होने के कारण "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र से तादि नव आत्मनेपद प्रत्ययों के टिभाग को एत्व नहीं होगा। अतः आपके पुनः स्मरणार्थ लुट् लकार तथा लृट् लकार के पूर्व में व्याख्यातकतिपय मुख्य सूत्रों की पुनः संक्षेप में व्याख्या की जा रही है।

सूत्र – आतो ङितः 7/2/81

सूत्रवृत्तिः – अतः परस्य ङितामाकारस्य इय स्यात्।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग से परे ङितों के आकार के स्थान पर इय् आदेश हो।

व्याख्या – आतः ङितः यह पदच्छेद है। द्विपदात्मक सूत्र है। इस सूत्र में "अतो येयः" इस सूत्र से अतः और इय् की अनुवृत्ति होती है। "अङ्गस्य" इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य यह पद 'अतः' इस विशेषणीभूत पञ्चम्यन्त का विशेष्य होता है, जिससे अङ्गस्य में श्रूयमाण षष्ठी पञ्चम्यन्त में परिविर्तत होकर अङ्गात् ऐसा बोध कराती है। अतः और अङ्गात् में परस्पर विशेषण–विशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है, फलतः अदन्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त होगा। 'अतः' पद में जो पञ्चमी है वह दिग्योग पञ्चमी है इस कारण परस्य पद का अध्याहार होगा। अदन्तात् अङ्गात् परस्य अर्थात् 'अदन्त अङ्ग से पर' इतना अर्थ फलित होगा। इस सूत्र में 'ङितः', जो पद में जो षष्ठी है वह अवयव षष्ठी है अतः ङित् प्रत्यय के अवयव जो आकार है उसको इय् ऐसा आदेश होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ इस प्रकार होगा – अदन्त अङ्ग से पर में जो ङित प्रत्यय है उसके आकार को इय् आदेश होता है।

सूत्र – स्यतासी लृलुटोः 3/1/33

सूत्रवृत्तिः – धातोः स्यतासी एतौ प्रत्ययौ स्तः लृ–लुटोः परतः। शबाद्यपबादः। लृ इति लृङ्–लृटोः ग्रहणम्।

सूत्रानुवाद – लृ के परे होने पर धातु से 'स्य', तथा लुट् के परे होने पर धातु से 'तासि' प्रत्यय हो। यह सूत्र से विधीयमान स्य और तासि शबादि (शप्, श्यन्, श्नु, श्नम् इत्यादि सभी विकरण प्रत्यय जो कि उस उस गण से सम्बन्धित हैं उन सबको बाधकर) के अपवाद है।

व्याख्या – स्यतासी लृलुटोः यह पद विभाग है। यह द्विपदात्मक सूत्र है। यहाँ स्यश्च तासि च स्यतासी इस तरह इतरेतरयोग द्वन्द्व समास होगा। स्यतासी यह प्रथमा विभक्ति का द्विवचनान्त रूप है। इसी तरह लृलुटोः पद, जो कि सप्तमी विभक्ति का द्विवचनान्त है, में भी लृ च लुट् च लृलुटौ, तयोः लृलुटोः इस तरह इतरेतरयोगद्वन्द्व समास होगा। यहाँ सूत्र में जो बिना अनुबन्ध के 'लृ' पढ़ा गया है वह 'लृट्' तथा 'लृङ्' दोनों का बोध कराता है। यदि पाणिनि महर्षि को लृ से किसी एक ही लकार विशेष का बोध इष्ट होता तो उसी लकार से

सम्बन्धित अनुबन्ध के साथ लृ का निर्देश किया होता, जैसे लृट् के लिए ट् अनुबन्ध या लृङ् के लिए ङ् अनुबन्ध। परन्तु बिना अनुबन्ध के निर्देश होने से यह दोनों का बोधक है। लृलुटोः में सप्तमीनिर्देश होने से "तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य" इस परिभाषा की उपस्तिथिः से लृट्, लृङ्, या लुट् लकार के पर में रहते धातु से स्य तथा तासि प्रत्यय विकल्प से होते है ऐसा अर्थ फलित होता है। यह प्रत्यय तिङ् और शित् से भिन्न होने के कारण आर्धधातुक प्रत्यय होते हैं। अतः यह सूत्र लृट् तथा लृङ्, लकार में शप् प्रत्यय को बाधकर स्य तथा लुट् लकार में शप् आदि विकरण प्रत्ययों को बाधकर तासि प्रत्यय का विधान करता है। इसलिए यह शप् आदि विकरण प्रत्ययों का अपवाद है। शप् आदि में आदिशब्द से श्यन्, श्नम्, श्नु, यक् इत्यादि उन उन गणों से सम्बन्धित विकरण प्रत्ययों का ग्रहण करना है।

ऐधिष्यत – एध् धातु से "लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ" इस सूत्र से लृङ् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष एकवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक त प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+तइस् अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य्+तइस् अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् स्य का आद्यवयव होगा) एध् इ+स्य् +तइस् अवस्था में "आडजादीनाम्" सूत्र से धातु से पूर्व में आट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर आ्+एध्+इ+स्य्+त इस अवस्था में "आटश्च" इस सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश होने पर ऐध्+इ+स्यत इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्यप्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर ऐधिष्यत रूप सिद्ध हो जाता है।

ऐधिष्येताम् – एध् धातु से "लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ" इस सूत्र से लृङ् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक आताम् प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+आताम् इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य्+आताम्+इस् अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य्+आताम्+इस् अवस्था में "आडजादीनाम्" सूत्र से धातु से पूर्व में आट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर आ्+एध् इ+स्य्+आताम् इस अवस्था में "आटश्च" इस सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश होने पर ऐध् इ+स्य्+आताम् इस अवस्था में "सार्वधातुकमपित्" सूत्र से अपित् सार्वधातुक प्रत्यय होने के कारण आताम् में ङित् का अतिदेश होने से "आतो ङितः" सूत्र से आकार को इय् आदेश होने पर ऐध्+इ+स्य्+इय् ताम् इस स्थिति में "लोपो व्योर्वलि" सूत्र से यकार लोप और आद्गुणः से अ–इ को एकार होने पर ऐध् इ+स्ये्+ताम् इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्यप्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर ऐधिष्येताम् रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्र – अतो दीर्घो यञि 7/3/101

सूत्रवृत्तिः – अतोऽङ्गस्य दीर्घो यञादौ सार्वधातुके।

सूत्रानुवाद – अदन्त अङ्ग के स्थान पर दीर्घ आदेश हो, यञादि सार्वधातुक के पर में।

व्याख्या – अतः, दीर्घः यञि यह पद विभाग है। अतः षष्ठी को एकवचन है। अतः में तपरकरण किया गया है, जिससे ह्रस्व अकार मात्र का ग्रहण होता है। 'अङ्गस्य' इस सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य इन दोनों पदों में विशेषण विशेष्य भाव है। अङ्गस्य यह विशेष्य है और अतः उसका विशेषण। विशेषणविशेष्य भाव होने से "येन विधिस्तदन्तस्य" सूत्र से तदन्त विधि होती है। तथा षष्ठी निर्देश होने से 'अलोऽन्त्यस्य' इस परिभाषा से अङ्गान्त ह्रस्व अकार (अङ्ग के अन्त में विद्यमान अकार) के स्थान पर यह अर्थ प्राप्त होता है। 'दीर्घः' पद प्रथमान्त आदेश परक है। यञि पद सप्तमी एकवचनान्त है। "तुरस्तुशम्यमः सार्वधातुके" से सार्वधातुके पद की अनुवृत्ति होती है। जो कि विशेष्य परक है और यञि उसका विशेषण है। तदनुसार सप्तम्यन्त निर्देश होने से विशेषणविशेष्य भाव होने पर भी तदन्तविधि न करके, उसके अपवादभूत तदादिविधि को किया जाता है। तो यञादि सार्वधातुक प्रत्यय के पर में होने से ऐसे अर्थ की प्राप्ति होती है। तो इस प्रकार सम्पूर्ण सूत्र का अर्थ होता है कि अङ्ग के अन्त में विद्यमान ह्रस्व अकार के स्थान पर यञादि सार्वधातुक प्रत्यय पर में होने पर दीर्घ आदेश होता है। जो कि ह्रस्व अकार के स्थान पर आकार रूप आदेश होता है। यह सूत्र भवामि की तरह एधिष्यावहे इत्यादि स्थलों पर दीर्घ आदेश करता है।

ऐधिष्यावहे – एध् धातु से "लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ" इस सूत्र से लृङ् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से उत्तमपुरुष द्विवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक वहि प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर, एध्+वहि इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य्+वहि इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर एध् इ+स्य्+वहिइस अवस्था में "आडजादीनाम्" सूत्र से धातु से पूर्व में आट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर आ+एध् इ+स्य्+वहि इस अवस्था में "आटश्च" इस सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश होने पर ऐध् इ+स्य्+वहि इस अवस्था में "अतो दीर्घो यञि" सूत्र से यकारपर अकार का दीर्घ होने पर ऐध् इ+स्या+वहि इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्यप्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर ऐधिष्यावहि रूप सिद्ध होगा।

20.5 एध् धातु की लृङ् लकार प्रक्रिया

ऐधिष्यन्त – एध् धातु से "लिङ्निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ" इस सूत्र से लृङ् लकार करने पर "तिप्तस्झि..." इत्यादि सूत्र से प्रथमपुरुष बहुवचन विवक्षा में आत्मनेपदसंज्ञक झ प्रत्यय करने पर उसकी सार्वधातुकसंज्ञा करने पर एध्+झ इस अवस्था में शप् प्राप्त होने पर "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से शप् को बाधकर स्य विकरण प्रत्यय करने पर एध्+स्य्+झ इस अवस्था में स्य की "आर्धधातुकं शेषः" सूत्र से आर्धधातुकसंज्ञा करके "आर्धधातुकस्येड्वलादेः" सूत्र से इडागम व अनुबन्ध लोप करने पर (टित् होने से इट् स्य का आद्यवयव होगा) एध् इ+स्य्+झ इस अवस्था में "झोऽन्तः" इस सूत्र से झ के स्थान पर अन्त आदेश करने पर एध् इ+स्य्+अन्त इस अवस्था में "अतो गुणे" इस सूत्र से पररूप करने पर एध् इ+स्यन्त इस अवस्था में "आडजादीनाम्" सूत्र से धातु से पूर्व में आट् आगम करने व अनुबन्ध लोप करने पर आ+एध्+इ+स्य्+अन्त इस अवस्था में "आटश्च" इस सूत्र से आकार व एकार दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश होने पर ऐध् इ+स्य्+न्त इस अवस्था में "आदेशप्रत्यययोः" सूत्र से इण् के पर में होने से और स्यप्रत्यय के अवयवरूप सकार होने से स्य के सकार को मूर्धन्य (षकार) आदेश करने पर ऐधिष्यन्त रूप सिद्ध हो जाता है।

ऐधिष्यथाः – यह मध्यम पुरुष एकवचन का रूप है। यहाँ सारी प्रक्रिया पूर्ववत् ही है केवल थास् के सकार को अन्त में रुत्व विसर्ग कर देना है।

ऐधिष्येथाम् – यह मध्यम पुरुष द्विवचन का रूप है। यहाँ सारी प्रक्रिया प्रथम पुरुष द्विवचन ऐधिष्येताम् की तरह ही है। केवल आताम् के स्थान पर आथाम् प्रत्यय करना है।

ऐधिष्यध्वम् – यह मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है। यहाँ सारी प्रक्रिया पूर्ववत् ही है। कोई भी नवीन सूत्र प्रयुक्त नहीं होता है।

ऐधिष्ये – यह उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है। यहाँ सारी प्रक्रिया पूर्ववत् ही है। कोई भी नवीन सूत्र प्रयुक्त नहीं होता है। धातु से उत्तम पुरुष एकवचन विवक्षा में इड् प्रत्यय, धातु से पूर्व आडागम तथा वृद्धि, स्य विकरण प्रत्यय तथा स्य को इडागम आदि कार्य करने के पश्चात् ऐध्+इ+स्य्+इ इस अवस्था में आद्गुणः सूत्र से अ इ को एकार गुण तथा स्य के सकार को आदेश प्रत्यययोः से षत्व करने पर ऐधिष्ये रूप सिद्ध होता है।

ऐधिष्यामहि – यह उत्तम पुरुष बहुवचन रूप है जो कि उत्तम पुरुष द्विवचन ऐधिष्यावहि की तरह ही बनता। भेद केवल प्रत्यय का है। वहि के स्थान पर महि प्रत्यय करना है।

तो इस प्रकार यह एध् धातु की लुङ् एवं लृङ् प्रक्रिया से सम्बन्धित पाठ समाप्त होता है। साथ ही एध् धातु से सभी दस लकारों से सम्बन्धित प्रक्रिया में आने वाले सूत्र तथा उनकी व्याख्या एवं रूपसाधन प्रक्रिया भी यहीं पूर्ण होती है।

लृङ् लकार –

ऐधिष्यत, ऐधिष्येताम्, ऐधिष्यन्त।

ऐधिष्यथाः, ऐधिष्येथाम्, ऐधिष्यध्वम्।

ऐधिष्ये, ऐधिष्यावहि, ऐधिष्यामहि।

20.6 सारांश

इस पाठ में आपने एध्–धातु के लुङ् एवं लृङ् लकार की प्रक्रिया एवं प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले सूत्रों के बारे में विस्तार से पढ़ा। पहले आपने लुङ् लकार के बारे में अध्ययन किया। यह एक आर्धधातुक लकार है। अतः इसमें शबादिकार्य न होकर शप् के स्थान पर च्लि–प्रत्यय तथा च्लि के स्थान पर सिच्–आदेश का विधान होता है। लुङ् लकार की प्रक्रिया में आपने मुख्यतया चार सूत्रों का अध्ययन किया। वे हैं – "आडजादीनाम्" "आटश्च" "आत्मनेपदेष्वनतः" तथा "इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्"। जैसा कि आप जानते हैं "आडजादीनाम्" सूत्र लुङ्–लङ्–लृङ् लकार की प्रक्रिया में वहाँ प्रयुक्त होता है जहाँ अजादि धातु का प्रसङ्ग हो। वहाँ धातु से पूर्व में आट् आगम का विधान करता है। अन्यत्र अजादि धातु से भिन्न स्थल पर तो "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" से धातु के पूर्व में अट् आगम का विधान किया जाता है। इस प्रकार आडजादीनाम् सूत्र लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र का अपवाद हुआ। क्योंकि लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र तो अविशेष रूप से उत्सर्गतया सर्वत्र धातुओं को प्राप्त होता है परन्तु आडजादीनाम् यह सूत्र तो केवल अजादि धातुओं में ही प्रवृत्त होता है। उसके बाद आपने "आटश्च" सूत्र का अध्ययन किया जिससे ज्ञात होता है कि आट् से पर में अच् वर्ण के होने पर दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादोश हो जाता है। फिर आपने "आत्मनेपदेष्वनतः" सूत्र का अध्ययन किया जो कि प्रथम पुरुष बहुवचन प्रत्यय झ के स्थान पर अत् आदेश करता है। यह सूत्र भी अपवाद सूत्र है। जो कि "झोऽन्तः" सूत्र से झ के स्थान पर प्राप्त अन्त–आदेश को बाधकर प्रवृत्त होता है। इसके बाद लुङ् लकार की प्रक्रिया से सम्बन्धित अन्तिम सूत्र था "इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्"। यह सूत्र इण्णन्त अङ्ग से पर में षीध्वम् शब्द के लुङ् तथा लिट् के धकार को ढकार आदेश करता है। इस सूत्र की विस्तृत व्याख्या को आप एध् धातु की लिट् लकार की प्रक्रिया के अन्तर्गत पढ़ चुके हैं। सूत्र व्याख्या के साथ आपने लुङ् लकार की कतिपय रूपसिद्धियों का अध्ययन किया जैसे – ऐधिष्ट, ऐधिषत, ऐधिढ्वम् इत्यादि। शेष रूपों की प्रक्रिया को पाठ के अन्त में आपके सौकर्य के लिए दर्शाया जाएगा।

इसके बाद लृङ् लकार की प्रक्रिया के सम्बन्ध में पढ़ा। यह एक आर्धधातुक लकार है अतः इस लकार में शप्–विकरण प्रत्यय को बाधकर स्य प्रत्यय का विधान "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र से किया जाता है। वस्तुतः देखा जाए तो लृङ् प्रक्रिया में लृट् लकार के मुख्य सूत्रों का उपयोग होता है। अन्तर केवल यह है कि ङित् लकार होने के कारण इसमें "टित आत्मनेपदानां टेरे" सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है। बाकि तो लुङ् लकार की तरह इस लकार में भी अजादि धातु होने से धातु से पूर्व में लुङ्लङ्लृङ्क्ष्... इत्यादि सूत्र से होने वाले अट्

आगम को बाधकर "आडजादीनाम्" सूत्र से आट् आगम का विधान किया जाता है। इसके अलावा कुछ सूत्र लट् प्रक्रिया के भी प्रयुक्त होते हैं। तो इस प्रकार से लृङ् लकार में मुख्यतः आपने जिन सूत्रों का अध्ययन किया वे क्रमशः इस प्रकार से हैं – "आतो ङितः", "स्यतासी लृलुटोः", "अतो दीर्घो यञि"। इन पूर्वोक्त सूत्रों से सम्बन्धित ज्ञान आपने इस पाठ में अर्जित किया। यहाँ आपको स्मरण कराया जा रहा है कि – लृङ् लकार का पहला सूत्र जिसकी व्याख्या इस पाठ में की गई है वह है "आतो ङितः" जिसे कि आप एध् धातु की लट् प्रक्रिया में पढ़ चुके हैं। इस क्रम में दूसरा सूत्र आता है स्य प्रत्यय विधायक सूत्र "स्यतासी लृलुटोः" का। इस सूत्र का प्रयोग भी आप लुट् व लृट् की प्रक्रिया के दौरान समझ चुके हो फिर भी स्मरणार्थ संक्षेप में व्याख्या पुनः कर दी गई है। लृङ् प्रक्रिया का अन्तिम सूत्र था "अतो दीर्घो यञि", इस सूत्र का प्रयोग भू धातु की प्रक्रिया में भवामि इत्यादि स्थल पर हुआ है। एध् धातु की प्रक्रिया में भी एधावहे इत्यादि स्थल पर इसका प्रसङ्ग आया है। तथापि संक्षेप में 'अदन्त अङ्ग को दीर्घ हो यञादि प्रत्यय के पर में रहते', इस अर्थ वाले "अतो दीर्घो यञि" सूत्र की व्याख्या पुनः इस पाठ में की गई है। तो इस प्रकार आपने लृङ् लकार की प्रक्रिया में आए सूत्रों का अध्ययन कर कुछ धातुरूपों की प्रक्रिया के बारे में जाना। शेष कुछ का परिचय आप आगे की इकाईयों में करेंगें।

20.7 शब्दावली

आगम – टित्–कित्–मित् इत्यादि लिङ्गों से चिह्नित आगम होते है। जो किसी के अवयव के रूप में आते हैं। अवयव के रूप में विधीयमान ऐसा अर्थ समझना चाहिए। इसलिए मित्रवत् आगमः ऐसा कहा जाता है। क्योंकि ये किसी को हटाकर उसके स्थान पर नहीं होते हैं। अपितु अवयव रूप में होते हैं। इसलिए अवयव षष्ठी का अर्थ अवयव–अवयवीभाव सम्बन्ध माना जाता है।

आदेश – आगम के विपरीत आदेश किसी के स्थान पर होते हैं। यह किसी वर्ण अथवा पद को हटाकर प्रवृत्त होते हैं। इसलिए शत्रुवत् आदेशः ऐसा कहा जाता है। आदेश निवर्तक (हटाने वाला) होता है जो किसी स्थानी के स्थान पर उसको निवृत्त करके होता है। स्थानी निवर्त्य होता है जिसको कि आदेश के द्वारा निवृत्त कर दिया जाता है अर्थात् हटा दिया जाता है। इसलिए स्थान षष्ठी का अर्थ निवर्त्यनिवर्तकभाव सम्बन्ध माना जाता है।

एकादेश – "एकः पूर्वपरयोः" यह एक अधिकार सूत्र है। इस सूत्र के अधिकार में ही "आद्गुणः", "वृद्धिरेचि", "अकः सवर्णे दीर्घः", "आटश्च" इत्यादि सूत्र पढ़े गए हैं। इसलिए इन सूत्रों के द्वारा विधीयमान आदेश पूर्व और पर इन दोनों वर्णों के स्थान पर एक ही होता है। इसलिए इसे एकादेश कहते हैं।

अपवाद – "यत्कर्तृकावश्यप्राप्तौ यो विधिरारभ्यते स तस्यापवादः" इस नियम के अनुसार जब किसी विधिसूत्र की किसी स्थल पर अवश्य प्राप्ति हो तो भी किसी अन्य विधिसूत्र का आरम्भ करें तो वह अवश्यप्राप्तविधि का अपवाद होता है। जैसे – लोट् के एकार के स्थान पर

"आमेतः" से आत्व की अवश्य प्राप्ति होने पर भी "सवाभ्यां वाऽमौ" यह सूत्र आरम्भ किया गया। क्योंकि लोट् लकार में एकार जहाँ जहाँ मिलेगा वहाँ–वहाँ आमेतः की अवश्य प्राप्ति है। लेकिन जहाँ पर सकार और वकार से पर में लोट् का एकार मिलता है वहाँ भी अगर आकार होने लगे तो सवाभ्यां वाऽमौ सूत्र निरवकाश हो जाएगा अर्थात् कहीं प्रवृत्त नहीं हो पाएगा। अतः किसी विधि का निरवकाश होना ही अपवाद बनने में बीज है। ठीक इसी प्रकार यहाँ "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से लुङ्–लङ्–लृङ् लकारों के पर में सभी धातुओं से अट् आगम प्राप्त होता है। परन्तु "आडजादीनाम्" सूत्र से केवल अजादि धातुओं को ही आट् आगम होता है। अगर सभी जगह "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" सूत्र से अट् आगम होने लगे तो "आडजादीनाम्" सूत्र निरवकाश होकर कहीं भी लक्ष्य में प्रवृत्त नहीं होकर व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए "आडजादीनाम्" यह सूत्र निरवकाश होकर पूर्व सूत्र का अपवाद बन जाता है। तो इस प्रकार "लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः" यह उत्सर्ग सूत्र अपवाद के विषय को छोड़कर अन्यत्र अर्थात् अजादिभिन्न धातुओं को छोड़कर अन्यत्र प्रवृत्त होता है। अजादि धातुओं में तो "आडजादीनाम्" ही लगेगा ऐसा निश्चय कर लेना चाहिए।

इसी प्रकार कर्तरि शप्, दिवादिभ्यः श्यन् इत्यादि शबादि की अवश्यप्राप्ति होने पर भी स्यतासी लृलुटोः इस विधि का आरम्भ किया गया। अतः स्यतासी लृलुटोः सूत्र शबादिविधायकसूत्रों का अपवाद होता है। क्योंकि अन्यत्र लकारों में चरितार्थ शबादि यदि लुट्, लृट् और लृङ् में भी होने लग जाए तो इन लकारों में विहितस्य और तासि कहीं भी प्रवृत्त नहीं हो पाएँगे और निरवकाश (व्यर्थ) हो जाएँगे। अतः निरवकाश रूप हेतु से स्य–तासि प्रत्यय का विधायक सूत्र शबादि का अपवाद हो जाता है। तो इस प्रकार स्य और तासि दोनों शबादि के अपवाद बन जाते हैं।

20.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य भीमसेन शास्त्री कृत भैमीव्याख्या सहित (द्वितीय भाग)।
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य सुरेन्द्रदेव स्नातकशास्त्री कृत आशुबोधिनी हिन्दीव्याख्या सहित।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. ईश्वरचन्द्रकृत सोमलेखा हिन्दीव्याख्यासहित।
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – आचार्य अर्कनाथ चौधरी कृत चन्द्रकला संस्कृत हिन्दी–व्याख्याद्वय सहित

20.9 अभ्यास प्रश्न

1. लुङ्लृङादि प्रक्रिया में "आडजादीनाम्" सूत्र किस प्रकार की धातुओं से पूर्व आट् का आगम करता है?

2. आड् आगम करने के पश्चात् आट् व उससे पर में विद्यमान अच् इन दोनों के स्थान पर वृद्धिरूप एकादेश किस सूत्र से होता है?
3. "आत्मनेपदेष्वनतः" इस सूत्र से किसका विधान किया जाता है?
4. ऐधिषत रूप किस लकार के किस पुरुष वचन में निष्पन्न होता है?
5. एध् धातु से लुङ् लकार प्रक्रिया में सिच् को इडागम किस सूत्र से होता है?
6. "आतो ङितः" सूत्र से किसके स्थान पर क्या आदेश होता है?
7. "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र में लृलुटोः पद का समास व विग्रह क्या होगा?
8. "स्यतासी लृलुटोः" सूत्र में लृ–शब्द किसका बोध कराता है?
9. "अतो दीर्घो यञि" सूत्र का लृङ् लकार प्रक्रिया में कहाँ उपयोग है?
10. स्यतासी लृलुटोः से होने वाले स्य और तासि प्रत्यय क्रमशः किस किस लकार में होते हैं?